आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2017-2019

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 4 | अंक 10 | उदयपुर शनिवार 01 जून 2019 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

आदिवासी और महाराणा प्रताप

-डॉ. महेन्द्र भानावत-

मेवाड़ भू-भाग आदिवासी बहुल भू-भाग है। यहां के राणाओं ने जितने भी युद्ध किये, आदिवासियों ने उनका सर्वाधिक साथ दिया। आदिवासियों में स्वाभिमान, देशप्रेम, समर्पण, मैत्रीभाव, ईमानदारी तथा वफादारी जैसे गुण कूट-कूट कर भरे पड़े हैं। मेवाड़ के राजचिन्ह में भी एक ओर राजपूत वीर तथा दूसरी ओर आदिवासी वीर दिखाया गया है।

प्रातः स्मरणीय महाराणा प्रताप

आदिवासियों की उत्पत्ति के संबंध में जो वृतांत मिलता है उसके अनुसार आबू के अग्निकुण्ड से चव्हाण वंश का उद्भव हुआ। इस वंश में एक नरू राजा हुआ। एकबार विजय की खुशी में नरू कंलाली के घर में घुस गया जहां उसने खूब छककर दारू पी। कुछ समय बाद उसे तेज भूख लगी तो पाड़ा काट खाया। ये दोनों कार्य उसकी प्रतिष्ठा और मर्यादा के अनुकूल नहीं थे। सुबह जब नरू का मद उतरा और सरदारों की नजर पाड़े की पूंछ पर पड़ी तो बात फैल गई कि नरू राजा तो आधी (अर्द्धरात्रि) में ही वास गया (बदबू देने लग गया) था। इससे लोग उसे आधी वासी कहने लगे। इसी आधी वासी से कालान्तर में आदिवासी नाम चल पड़ा।

इस नरू ने 108 विवाह किये पर संतान एक भी नहीं हुई। इस पर बांसवाड़ा जिले के धारणा गांव के इमली वृक्ष पर 108 पालने बांधे गये। वृक्ष के नीचे देवता का वास था। उसे मनौती बोली गई। इससे नरू के एक सौ आठ संतानें हुईं। इनकी एक सौ आठ गोत्रें (साखें) चलीं। बांसवाड़ा में सब दूर ये आदिवासी फैल गये। सबसे अधिक आदिवासी राजस्थान में इसी बांसवाड़ा जिले में मिलेंगे। आदिवासी गोत्रें भी सर्वाधिक इसी जिले में मिलेंगी।

आदिवासियों के साथ रहने से प्रताप मंत्र, तंत्र, मूठ, भूत, प्रेत, डायन, चूड़ैल, सिकोतरा, सिकोतरी, सिंयारा, सिंयारी आदि अतीन्द्रिय शक्तियों के प्रभाव और प्रयोग से परिचित थे। युद्ध में आदिवासियों की अधिकता होने से इन मारक विद्याओं का प्रयोग होना भी कोई अनहोनी बात नहीं थी।

प्रताप के साथ इन शक्तियों की बड़ी मदद रही। वीर भंवरे और जोगण्या मधुमक्खियां बन दुश्मनों पर बुरी तरह टूट पड़तीं। इनके जहरीले डंक तीर और गोलियों से भी अधिक असरकारी होते।

प्रताप पर सिकोतरी बड़ी मेहरबान रही। अदृश्य शक्ति के रूप में वह प्रताप के भाले की नोक पर अपना प्रभाव दिये रहती। इससे स्पष्ट है कि यहां जितने भी युद्ध लड़े गये, अदृश्य शक्तियों ने सदैव युद्धवीरों का साथ दिया। 'हल्दीघाटी' नामक एक कविता में मैंने लिखा-

तुम्हें क्या मालूम
यहां दुश्मनों को छेदने-भेदने के लिए
खजूर का एक-एक टोंचा
तीर बन बरसा था
और पीपल का पत्ता-पत्ता
मधुमक्खी बन जहरडंकी हो गया था।
वे युद्ध क्या युद्ध होते हैं
जिन्हें केवल आदमी लड़ता है!
आदमी क्या लड़ेगा युद्ध?
साक्षी है यह वट वृक्ष
जो थाली जैसे पात लिये
पसर गया था
और कोंपलों पर सिंदूरी आंखें उग आई थीं
वे कोंपलें असंख्यक देवियां थीं
और देवों ने
गूंदे टेमरू बेर और बड़गूंदे बन
बहादुरों को युद्ध और
जीवन का रस दिया था।

इन्हीं आदिवासियों के भरोसे अकेला महाराणा प्रताप ही ऐसा रणबंका था जिसने अकबर को लोहे के चने तक चबवा दिये। एक तरफ सत्ता का सिंहासन, अधिकार सुख की मादकता, ऐश्वर्य, समृद्धि और सम्पन्नता का गौरव गुमान और दूसरी ओर अभाव, भटकाव, संघर्ष, जूझ, पराजय के भाव; लेकिन मानवीय मूल्यों का छलकता भंडार।

जो मूल्यों के लिए, मानवता के लिए, आजादी के लिए अपना उत्सर्ग करता है वही अमर रहता है। वही प्रताप कहलाता है। ऐसे ही मूल्यों के रक्षक राणा प्रताप और उनके साथी आदिवासी थे जिनकी रग-रग में स्वतंत्रता के, स्वाधीनता के, शौर्य के, सत्व के, गौरव के, देशप्रेम के भावों का पूंजीभूत पौरूष भरा हुआ था।

भारतीय जनजीवन में महाराणा प्रताप स्वाधीनता के प्रतीक प्रातःस्मरणीय बन प्रेरणा के प्रणम्य हो गये हैं। उनमें लोहे को पानी कर देनेवाली ऐसी अतुलनीय ताकत थी कि अपार सैन्यबलधारी और शक्ति सम्राट होते हुए भी अकबर उन्हें पराजित नहीं कर सका। जब राजपूताने के सभी राजाओं ने अकबर की अधीनता सवीकार कर ली तब अकेला प्रताप ही एक ऐसा वीर बांकुरा था जिसने अपने मेवाड़ को अनमित रखा।

इस मेवाड़ की पहचान यहां के अनगिनत मगरों से है। ऊंचे-ऊंचे मगरे, नीची-नीची मगरियां, मथारे, घाटे, घाटियां, टेढ़ेमेढ़े बांके बलखाते भ्रमित करते रास्ते, नद, नाले, वैरे, पठार तथा खादरे ऐसे कि कोई भूलाभटका आ जाय तो भटकता ही रहे और शायद ही कभी गंतव्य पकड़ पाये।

प्रताप की माता बेणीजी बड़ी स्वाभिमानी, निर्भीक और बहादुर बलिष्ठ थी। जंगल में रहने और कंदमूल खाने पर उसका रजपूती खून सिंहनी सा खौल उठता था। अपने शावकों को निरन्तर दूध पिलाने पर जैसे सिंहनी का दूध झरता रहता वैसे ही बेणीजी प्रताप को पाले रहती। अपने पुत्र को शक्तिशाली और स्फूर्तिवान बनाने के लिए नारियां अपने दूध के साथ-साथ खरगोश का रक्त मिला सिंहनी का दूध पिलाती थी इसीलिए रजपूत वीर सिंहनी का पूत कहलाता तथा अरिदल पर सिंहनी सा दहाड़ता, खरगोश सा लपक पड़ता था। प्रताप ऐसे ही पूत-सपूत थे।

प्रताप को मेवाड़ के वन-जंगलों, नदी-नालों, मगरे-मगरियों से जो सत्व मिला वैसा ही जीवन तत्व उन्हें वनवासी अपने अनन्य सखा साथी आदिवासी भील-मीणों से मिला। पहाड़ों ने जहां उनका हिया कठोर और हाड़ मजबूत किया वहां जंगलों ने दुश्मनों से जूझने का जोश और जलवा दिया। उनके जैसे वन-शेर के रहते किसकी मजाल कि कोई अन्य शेर अपनी दहाड़ दे पाये। वे शेरों में शेर 'वन शेर' थे तो जन-जन में अव्वल 'जन शेर' थे। यदि किसी से वैरभाव था तो वह युद्ध के मैदान में; अन्यथा तो उनका सबके साथ मैत्रीभाव ही था। उदयपुर में मोतीमगरी पर फकीरवेश में आये अकबर को पहचानते हुए भी प्रताप ने वैरभाव भुलाकर उसे रोटी दे विदा किया।

मोती मगरी पर मोती महल

प्रताप को पराक्रमी बनाने के लिए देवलिया के स्वामी रायसिंह ने युद्ध के शस्त्र और शास्त्र में पारंगत किया तथा सत्ता, शासन, संघर्ष एवं स्वाधीनता का बीज-मंत्र दिया। तब पोथियों की पढ़ाई नहीं होती थी। कोई बुजुर्ग, कोई शाह, कोई बड़ेरा, कोई दीवान होता जो ज्ञान देता। पढ़ाई के नाम पर प्रताप मात्र मोटे अक्षर लिखना जानते थे।

मीणे जानते थे कि प्रताप के पास अकबर की तुलना में सैन्यबल, राजशक्ति और शासन समृद्धि कुछ भी नहीं है किन्तु वे यह भी जानते थे कि चूहे में बिल्ली से कई गुनी अधिक ताकत होती है किन्तु चूहा चूंकि बिल्ली को देखते ही असहाय हो जाता है और डर के मारे आंख मीच लेता है तब बिल्ली का वार चलता है और वह सहज ही उसे दबोच खाती है। मीणे निरन्तर प्रताप को प्रोत्साहित करते और कहते कि हमारा राजा कोई है तो प्रताप ही है। हम खून की नदियां बहादेंगे, दुश्मन की बोटी-बोटी उड़ादेंगे किन्तु किसी अन्य को राजा अथवा राणा नहीं मानेंगे।

हल्दीघाटी का युद्ध प्रताप का अंतिम युद्ध था जो अनिर्णित ही रहा। प्रताप की ओर से इस युद्ध में मेण कुल के मीणों की संख्या सर्वाधिक थी। युद्ध के दिन हल्की सी बारसात हुई थी जिसके फलस्वरूप वहां जो छोटी सी तलाई थी वह रक्तवर्णी होगई इसीलिए उसे 'रक्त तलाई' कहना शुरू कर दिया।

इस युद्ध में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका मानसिंह की रही। उदयपुर के पठारी जंगल में जब युद्ध का पैगाम लेकर मानसिंह पहुंचे तब प्रताप से उनकी मुलाकात हुई। प्रताप के मन में इस बात का खार था कि राजपूत होकर भी मानसिंह अकबर की गोद में जाकर बैठ गये अत: उनसे जै रामजी तो की परन्तु हाथ मिलाने को अपना हाथ आगे नहीं किया बावजूद इसके मानसिंह ने प्रताप को जोश ही दिलाया और कहा- तलवारों से तलवारें भिड़ाकर अकबर को दिखादो कि रजपूती जवानी कैसी होती है। नाम जवानों का होता है, बूढ़ों का नहीं। सांगा बूढ़ा था। उसकी संतान पंगुर हुई मगर अकबर को बतादो कि पंगुर की संतान कितनी वीर होती है। मानसिंह सबकुछ जानते थे पर मजबूर थे। यह मजबूरी थी अपनी बहिन जोधाबाई के नाम को छिपाने की।

सबकुछ देखते दिखाते भी **मानसिंह ने बड़ी चतुराई से जोधाबाई की बजाय अपने ही दीवान वीरमल की पुत्री पानबाई को अकबर के साथ ब्याह दी जो जोधाबाई की हमशक्ल थी। इसी भेद के खुल जाने के भय से मानसिंह को अकबर की चाकरी में जाना पड़ा। कोई नहीं जान पाया कि मानसिंह अकबर के खैरख्वाह नहीं होकर अन्तर से उसके शत्रु ही रहे। अन्तर था तो केवल यही कि वे नजदीक से अकबर के साथ रहकर अकबर से लड़ रहे थे जबकि प्रताप एक नामजद वैरी के रूप में दूर से अकबर से लोहा ले रहे थे।**

मानसिंह जानते थे कि योद्धा के दिल से भी मजबूत घोड़े के हड्डे होते हैं। जो इन हड्डों को पतंग की तरह उड़ा सकता है उसके लिए दुश्मन पर वार करना रुई के ढेर पर तलवार चलाना है। मानसिंह ने दिल्ली जाकर सर्वथा गुप्त बैठक बुलाई किन्तु उन्हीं में से कुछ ऐसे दगाबाज निकले जिन्होंने अकबर को जाकर सारा भेद दे दिया।

एक बीरबल ही ऐसा था जिसने सच्चे मित्र की भांति मानसिंह की मदद की। वह प्रकांड पंडित था। अकबर के वहां मानसिंह के खिलाफ जो भी षड़यंत्र रचाजाता उसकी तत्काल खबर पहुंचाकर वह मानसिंह को सावचेत करता।

युद्ध के दौरान महिला सैनिकों का नेतृत्व कर रही प्रताप की रानी चेतीबाई ने अपने सुहाग को लुटते देख लाज का पड़दा खोला और बार-बार हाथ सिर पर करते हुए मानसिंह को अपनी मांग के सिंदूर की रक्षा करने का संकेत दिया। रानी के इस इशारे से मानसिंह का हिया डोल गया फलस्वरूप प्रताप का सिर उड़ाने की बजाय उन्होंने चेटक की टांग उड़ादी। - शेष पृष्ठ सात पर

जनजातियों में गाथा-गायकी पुस्तक लोकार्पित

जनजातियों में सदियों से पारंपरिक जो कंठासीन साहित्य संरक्षित है वही भारतीयता की असली पहचान है। इसलिए यह बहुत जरूरी है कि इन जातियों की संस्कृति, जीवनधर्मिता और मानवीय मूल्यपरक जो विरासत विद्यमान है, समय रहते उसका समुचित मूल्यांकन अत्यंत आवश्यक है। ये विचार गुजरात के प्रख्यात समाजशास्त्री एवं शिक्षाविद् प्रो. सागरमल बीजावत ने डॉ. महेन्द्र भानावत लिखित ' जनजातियों में गाथा-गायकी' नामक पुस्तक के लोकार्पण अवसर पर व्यक्त किये।

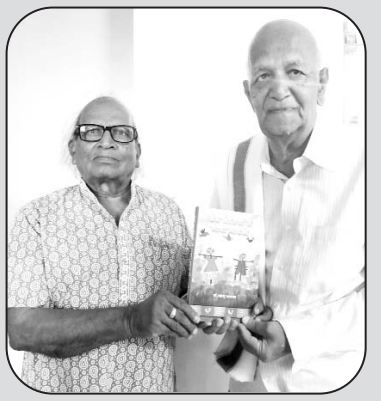

उन्होंने कहा कि यह कार्य डॉ. भानावत पिछले लगभग छह दशक से करते आ रहे हैं। पहलीबार उन्होंने ही आदिवासी भीलों में प्रचलित गवरी नामक आदिम नृत्य पर प्रामाणिक शोध कार्य किया था और उसके बाद आदिवासियों पर उनकी एक दर्जन से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। प्रस्तुत पुस्तक जनजातियों में गाथा-गायकी में डॉ. भानावत ने चार खण्डों में राजस्थान की जनजातियों में प्रचलित भारत, पड़, कावड़ तथा कड़ा नामक गाथाओं का बड़ा ही कलापूर्ण, संश्लिष्ट एवं प्रामाणिक अध्ययन प्रस्तुत किया है।

इस अवसर पर डॉ. कहानी भानावत, श्रीमती राजकुमारी बीजावत, कमलेश जैन एवं श्रीमती मंजु जैन उपस्थित थे।

आशा है, इससे प्रेरित होकर अन्य विद्वान एवं शोधकर्मी भी इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य करेंगे।

इस अवसर पर डॉ. भानावत ने कहा कि मौखिक साहित्य के संकलन एवं संरक्षण का कार्य अत्यंत कठिन और बड़े धैर्य का है। जिस क्षेत्र अथवा जाति विशेष से जुड़ा कोई भी अन्वेषण कार्य हो उसमें वही सफल हो सकता है जिसे उस अंचल, परिक्षेत्र और जनजीवन की पुख्ता जानकारी हो और उससे भी अधिक समझने की जिज्ञासा तथा ललक हो। आज के युवाओं के सामने सबसे बड़ी चुनौती उनकी आजीविका की है। इसलिए इस ओर बहुत कम लोग आकर्षित हो रहे हैं तब भी अनेक विश्वविद्यालयों में यह कार्य किया जा रहा है और स्वयं आदिवासियों से जुड़े विद्वान भी इस ओर काफी अच्छा काम कर रहे हैं।

गांधी के 150वें वर्षोत्सव पर

तकली और सूत के साथ ले गए चरखा बंदर और बकरी

-हरमन चौहान-

हे बापू,
तेरे रामराज्य में
कुछ संत्री
हो गए मंत्री
कभी-
जो चरखे से कातते थे सूत,
वे हो गए कुछ राजदूत,
कुछ हो गए धूर्त
कुछ चमचा पूत-
कभी आपके आश्रम में
लगाते थे झाड़ू
मरते-मरते ऐसे निकले आड़ू
कि पार्टी से किये गए विमुख
जाकर खड़े हो गए विपक्ष सम्मुख
और जो निकाला करते थे बकरी का दूध
ऐसे सुत अभूतपूर्व
विकास कार्यों में हो गए प्रमुख
जो नहीं रहे कभी आपके सम्मुख,
उनमें से कई बन गए
राज्यपाल अमुक-अमुक।
हे बापू!
तेरे राज्य में कुछ तंत्री
हो गए मीडिया में षड़यंत्री
हो गए कई गुमनाम नामवर
कई राष्ट्रभक्त अनाम
हो गए बदनाम
क्या बताऊं कुछ आदमी
हो गए अकादमी
कुछ धर्मभीरू
हो गए धर्मवीर
कुछ हो गए तन के
धन के कर्म-वीर
कुछ हो गए संसद में
सवाल के दलाल-वीर
कुछ हो गए कबूतरबाजी में वीर-हमीर।
कुछ गुण्डे हो गए
कुछ बलात्कारी में माहीर
कुछ नेता हो गए धनवेत्ता
कुछ हो गए क्रेता वीर
कुछ छलतंतरी, बन गए मंतरी
माया बटोर कर होगए धनवंतरी
कई शातिर
पार्टी के खातिर,
तकली और सूत के साथ
ले गए तेरा चरखा, बंदर और बकरी।
हे रामराज्य के दूत!
तेरे ये पूत
लिया प्रजा को लूट
भाग्य देश का गया फूट
ये यमदूत
कुछ हो गए अवधूत
कुछ हो गए अखलपूत
हे बापू!
आपके स्वदेशी आंदोलन की जगह
उदारीकरण का हो गया है चलन
अहिंसा की जगह
आतंकवाद का हो गया है प्रचलन
तुम्हीं बताओ,
कोई चांटा मेरे गाल पर मढ़े
तो मैं उसके चांटा मारूं
या गाल आगे कर दूं?
इस देश में तेरे नेता
आरक्षण के नाम पर करवा रहे हैं
सड़कों पर दंगल
कई जंगली
कटवा रहे हैं
मंडल, कमंडल और बंडल के जरिये
कैसे आएगा इस देश में रामराज्य!!

मतीरे की बेल

- डॉ. पुरूषोत्तम छंगाणी

राव अमरसिंह जोधपुर के महाराजा गजसिंह के पाटवी पुत्र थे। अमरसिंह स्वभाव से बड़े तीखे, उन्मादी, घोर स्वाभिमानी तथा अपनी मरोड़ के धाकड़ वीर थे। अपने मन के राजा होने से उनमें जरा भी विनीत भाव नहीं थे। इसी हेंकड़ी के कारण पिता-पुत्र के बीच बनीठनी रहती थी।

महाराजा को उनका यह स्वभाव ठीक नहीं लगा फलस्वरूप उन्होंने अमरसिंह को समस्त अधिकारों और दायित्वों से वंचित कर राज्य से बाहर कर दिया।

अमरसिंह जोधपुर से निष्कासित हो सीधे दिल्ली बादशाह शाहजहां की सेवा में पहुंचे। शाहजहां ने अपने राज्य में रख उनकी वीरता को बखान उन्हें राव की उपाधि दे नागौर का पट्टा बख्शीश कर दिया। अमरसिंह ने अपनी होशियारी तथा प्रबन्धपटुता से राजकाज का सुसंचालन किया और अच्छी पैठ बनाई।

नागौर और बीकानेर की सीमा एक-दूसरे से सटी हुई थी। एक बार नागौर की सीमा पर मतीरे की जंगली बेल उगी जो बीकानेर की सीमा में फैली। वहां फल के रूप में उस बेल के मतीरा लगा। मतीरा बड़ा अच्छा उम्दा था पर बीकानेर की भूमि पर था।

आगे जाकर यही नाचीज मतीरा एक बड़े विवाद का कारण बना। दोनों ने मतीरे पर अपना-अपना स्वामीत्व दिखाया। नागौर वालों ने कहा, मतीरे की मूल जड़ हमारी भूमि पर होने से मतीरे के मालिक हम हैं जबकि बीकानेर वालों का कहना था कि मतीरा हमारी भूमि पर होने से उसके असली हकदार हम हैं।

दोनों पक्ष अहंकारी। अपनी-अपनी बात पर अडिग। कोई झुकने को तैयार नहीं। समझौते की कोई आश नहीं। दोनों की आंखें तेज हुई। अपनी-अपनी मूंछों पर बंट मारते दोनों में कलह छिड़ गया। अन्ततोगत्वा उस मतीरे पर विजय पाकर बीकानेर वाले अपने दरबार में ले गए।

दरबारियों ने उस दिन बड़ा उत्सव मनाया और मतीरे को सोने के कटोरे में सजाकर गर्व के साथ राजदरबार में रख दिया।

नागौर की पराजय के समय राव अमरसिंह मौजद नहीं थे। उन्हें जब पराजित होने की खबर मिली तो वे आगबबूला हुए। उन्होंने अपने प्रधान को बीकानेर राज्य पर हमला कर मतीरा प्राप्त करने का हुक्म दिया। यह बात दिल्ली तक पहुंची। बादशाह को हमले की बात उचित नहीं लगी।

उन्होंने अमरसिंह को कहलवाया कि एक मतीरे के कारण हमला जैसा कदम अशोभनीय है। अमरसिंह ने बादशाह का सन्देश नहीं माना।

बादशाह ने इस विवाद को सुलटाने के लिए अमीन सलावतखां को मुकर्रर किया। राव अमरसिंह ने बादशाह के इस फैसले को भी मानने से इन्कार कर दिया। बादशाह ने शाही ड्योढ़ी पर बारी-बारी से पहरा देने के लिए सभी उमरावों की नियुक्ति कर दी। अमरसिंह की जब बारी आई तो उसने स्पष्ट मना कर दिया। इससे बादशाह की नाराजगी बढ़ गई। उन्होंने अमरसिंह पर सात लाख का जुर्माना ठोक दिया।

एक दिन अमीन सलावतखां ने दरबार में मतीरे पर बीकानेर के हक की बात कही और फिर राव पर जुर्माने का फरमान सुनाया तो राव अमरसिंह का क्रोध आपे से बाहर हो गया।

वह गाली गलौच पर उतर आया तब सलावतखां को गंवार कहने के लिए ग का उच्चारण किया। वह पूरा बोल भी नहीं पाया कि अमरसिंह बुरी तरह तिलमिलाया और सलावतखां के पेट में कटार भौंकते, बादशाह पर आक्रमण किया पर बादशाह बाल-बाल बच गया।

अमरसिंह की इस जानलेवा हरकत से भरे दरबार में हलचल मच गई। हाहाकार के बीच सभी अमरसिंह को मारने दौड़े। सारे दरवाजे बन्द होने से अमरसिंह लड़ते-भिड़ते बुर्ज पर जा चढ़ा और नीचे मैदान में घोड़े पर कूद गया। इससे घोड़े के प्राण-पखेरू उड़ गए मगर अमरसिंह अपने साथियों के साथ नागौर पहुंच गया।

बादशाह और प्रमुख दरबारी मंत्रणा करने लगे। सभी चाहते थे कि ऐसा कोई उपाय खोजा जाय जिससे अमरसिंह का खात्मा जरूर हो जाय। सबने मिल तय किया कि राव अमरसिंह के साले को प्रलोभन देकर एक षड़यन्त्र के तहत अमरसिंह का काम तमाम कराया जा सकता है।

लालच क्या नहीं कर सकता! साले अर्जुनसिंह गौड़ को इसके लिए पटाया गया। सफल होने पर राज्य का स्वामीत्व देने का प्रलोभन पाकर अर्जुनसिंह तैयार हो गया। उसने समय देखकर धोखे से अपने सगे बहनोई को मौत के घाट उतार दिया।

बादशाह शाहजहां को जब खबर मिली तो वह बड़ा खुश हुआ। उसने शाबासी दी और इनाम दिया। अशर्फी की पालकी बख्शीश दी। यही अमरसिंह राठौड़ कठपुतली भाटों में ख्याल बन कठपुतली खेल का सिरमौर बना।

खोज-खबर

गांव-गांव गोगा

राजस्थान डग-डग और पग-पग देव की धरती रहा है। इसलिए यहां जितने देवी-देवता मिलेंगे उतने शायद ही किसी अन्य प्रान्त में हों। बड़ल्या हींदवा नामक नौ लाख देवियों का स्थान भी यहीं है। राजस्थान तथा राजस्थान के बाहर मध्यप्रदेश, गुजरात आदि के देवरों में स्थापित होने वाली लोक प्रतिमाएं भी यहां के कुम्हारों द्वारा बनाई जाती हैं। इन देवताओं में कुछ ऐसे हैं जो ऐतिहासिक वीर-पुरुष हैं जो अपने असाधारण एवं वीरतापरक कार्यों के कारण लोकजीवन में देवता के रूप में पूजित हुए। रामदेवजी, पाबूजी, तेजाजी तथा गोगाजी इनमें प्रमुख हैं।

सर्पदेव गोगा :

वीरवर गोगाजी गायों की रक्षा के कारण देवत्व को प्राप्त हुए। ये बड़े योद्धा एवं चमत्कारिक पुरुष थे। मुख्यत: सांपों के देवता के रूप में इनकी बड़ी धाक है। इनके भोपे सर्प काटे व्यक्ति को उसका जहर चूसकर चंगा करते हैं। सांपों पर असाधारण अधिकार होने के कारण गर्भावास में ही गोगाजी ने इन पर विजय प्राप्त कर ली थी। पालने में भी इन्हें सांपों से खेलते हुए देखा गया और सिरिअल से विवाह करने में जो संकट इन्हें झेलना पड़ा उसका मुकाबला भी इन्होंने बंशी बजाकर नागों को अपने अधीन करके किया। वासिक की आज्ञा से तातिरा ने सिरिअल से गोगा का विवाह कराने में सहायता की।

प्रणवीर पाबूजी की तरह इन्होंने भी विधर्मियों तथा अपनी मासी के दो पुत्रों को मौत के घाट उतारकर गायों को बचाया। मासी के इन लड़कों को मारने के समाचार गोगाजी की माता बाछल ने सुने तो वह उन पर अत्यन्त क्रोधित हुई और उन्होंने कभी मुंह नहीं दिखाने को कह दिया। इस पर कहते हैं, गोगाजी अपनी लीली घोड़ी पर सवार हो वहां से चल दिये और गोगामेड़ी जाकर भूमि समाधि ले ली।

गोगा निशान :

भूमि समाधि वाला यह स्थान बीकानेर जिले की नोहर तहसील से आठ कोस पूर्व की ओर है। यहां गोगा नवमी को बड़ा भारी मेला लगता है। इस मेले में राजस्थान के अतिरिक्त गुजरात, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, पंजाब, हरियाणा, हिमाचलप्रदेश, बंगाल, बिहार तक के लोग हजारों की संख्या में दर्शनार्थ एवं सर्प-भय मुक्ति हेतु आते हैं। गोगाजी के भक्त जुलूस के रूप में पैदल गाते-बजाते हुए मेले में सम्मिलित होते हैं। इनके आगे ही आगे गोगाजी का भारी वजनी निशान रहता है।

यह निशान दस-दस फुट के लम्बे बांस पर नीले अथवा काले रंग का लम्बा कपड़ा लगाकर बनाया जाता है। इस पर सांपों के कपड़ों के चित्र सी दिये जाते हैं। बांस के ऊपरी भाग को मयूर पंखों, कोडियों तथा कांचलियों से बड़ी कलात्मक सज्जा दे दी जाती है। यह निशान आड़ा-टेढ़ा न रखकर बिल्कुल सीधा रखा जाता है। इसके नीचे वाले भाग को निशान वाला अपनी नाभि के स्थान पर कपड़े से बांधे रखता है। भक्तों के हाथों तथा गलों में तरह-तरह के काले, पीले, सफेद, चितकबरे सांप फुकारते हुए शोभित होते हैं। कुछ लोग भाव में लोहे की बड़ी-बड़ी सांकलों से अपनी पीठ ठोकते रहते हैं। यह दृश्य बड़ा ही अद्‌भुत तथा रोमांचकारी होता है।

गोगा : जहरदेव-जाहरपीर :

गोगाजी हिन्दू चौहान राजपूत थे परन्तु रामदेवजी की तरह मुसलमान भी उन्हें उतना ही आदर-पूजा देते हैं। इसीलिए हिन्दुओं के गोगाजी मुसलमानों में गोगापीर, जाहरपीर के नाम से प्रसिद्ध हैं। गुरु गुग्गा तथा बागड़वाला के नाम से भी ये लोकजीवन में चिंतारे जाते हैं। सर्प का जहर दूर करने के कारण ये जहरदेव के रूप में भी विख्यात हैं। गुग्गा के प्रसाद से संतान प्राप्ति तथा धन-धान्य की वृद्धि होती हुई भी देखी गई है।

यह एक विचित्र संयोग ही है कि गोगाजी के हिन्दू मन्दिर का पुजारी मुसलमान है। मन्दिर में कोई प्रतिमा न होकर केवल एक चबूतरा बना हुआ है। साथ ही मन्दिर की छत पर एक गुम्बज की जगह एक मीनार है जो क्या हिन्दू, क्या मुसलमान प्रत्येक जाति के लिए श्रद्धा-आस्था और आदर का आकर्षण बनी हुई है। किवदंती है कि गोरखनाथ को दी हुई गूगल से लीली घोड़ी, नरसिंह पाण्डे, मज्जु चमार, रतनसिंह भंगी तथा स्वयं गोगाजी, ये पांचों एक साथ पैदा हुए इसलिए ये पांच पीर के नाम से जाने जाते हैं। यही कारण है कि गोगाथाना में गोगाजी के साथ-साथ इन चारों की भी पूजा की जाती है।

गोगा : गाथा एवं ख्याल तमाशे :

गोगाजी पर लोगों की अटूट श्रद्धा-आस्था के फलस्वरूप उनके सम्बन्ध में कई गाथाएं और गीत सुनने को मिलते हैं। हरियाणा में तो गूगापीर अथवा जाहरपीर नाम से एक राग ही अलग चलता है जिसे गोगा-भक्त पण्डे गाते हैं। इधर संत-योद्धाओं से सम्बन्धित कथाओं को भी गूगा चक्र की संज्ञा मिली हुई है। गोगा नवमी को महिलाएं व्रत रखती हैं। इससे पूर्व सप्तमी को बभूतासिंह, अष्टमी को केशरिया कुंवर तथा दशमी को तेजाजी की पूजा की जाती है। ये चारों ही देवता नागदेव के रूप में पूजित-प्रतिष्ठित हैं।

गोगा नवमी को गोगाजी के रूप में मिट्‌टी का घोड़ा पूजा जाता है। घोड़े पर मिट्‌टी की बनी गोगा-प्रतिमा होती है जो कुम्हारिनों द्वारा बनाई जाती है। गृहस्वामीनियां पूजापे में राखी, खीर, नारियल आदि चढ़ाकर इस प्रतिमा की पूजा करती हैं। गांवों में औरतें अपने घर की दीवालों पर हरिये गोबर जिसे लीलपी कहते हैं, से गोगाजी के भांत-भांत के थापे बनाती हैं जिनमें कहीं सर्प के साथ गोगाजी, कहीं शमीवृक्ष और गोगाजी, कहीं सर्प और सिरिअल का गठबंधन तथा कहीं गोगाजी को लीली घोड़ी पर सवार हुआ दिखाया जाता है। समी वृक्ष पर गोगाजी का निवास माना जाता है इसलिए यहां 'गांव-गांव गोगा ने गांव-गांव खेजड़ी' कहावत बड़ी प्रसिद्ध है।

गोगाजी के कई ख्याल भी राजस्थान में प्रचलित हैं जो रात-रात भर बड़े उत्साह, उमंग, आनंद, उल्लास और श्रद्धापूर्वक खेले जाते हैं। **-डॉ. कहानी भानावत**

एक यादगार संगोष्ठी का स्मरण

मोहनलाल सुखाड़िया विश्विविद्यालय, उदयपुर के हिन्दी विभाग की ओर से 11-12 जनवरी 1999 को हिन्दी नाटकों तथा लोकनाट्यों पर आयोजित संगोष्ठी में दूसरे दिन लोकनाट्यों पर विषय प्रवर्तन करते हुए लोककलाविज्ञ डॉ. महेन्द्र भानावत ने विभिन्न नाट्य शैलियों को उद्‌धृत करते हुए कहा कि राजस्थान में न केवल सम्पूर्ण लोकनाट्य शास्त्र की विकास प्रक्रिया के नाट्य-प्रकार मिलते हैं अपितु जितनी विविध और वैभवपूर्ण विधाएं यहां प्रचलित हैं उतनी देश के किसी भी भू-भाग में नहीं मिलेगी।

डॉ. भानावत ने नाटकों के विकास क्रम में सर्वप्रथम बैठकी ख्याल का जिक्र किया जिसका विकास दंगली ख्याल के रूप में हुआ। चित्तौड़गढ़ के आसपास का क्षेत्र जो तुर्रा कलंगी ख्यालों के रूप में चर्चित हुआ वह दंगली ख्यालों का ही रूप है।

आगे चलकर वाणी विस्तार के साथ हेला ख्यालों का विकास हुआ जिनका विकसित रूप अलवर के आसपास सांगीत दंगल के रूप में दिखाई देता है। इस विधा में कई लघु नाट्य, नाटिका, प्रकरी, नृत्य, खेल आदि मिलते हैं।

संगोष्ठी की अध्यक्षता साहित्यकार नंद चतुर्वेदी ने की। डॉ. रमा शर्मा ने अपने पत्रवाचन में मणि मधुकर के रस गंधर्व में उल्लेखित सुरध्याणी ख्याल का जिक्र किया जिस पर उपस्थित विद्वानों ने कहा कि यह कोई ख्याल विधा रही ही नहीं।

डॉ. चिरंजीत, डॉ. अनिता चौधरी, डॉ. महिपालसिंह ने पत्रवाचन किया। विक्रम विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी ने लोक को उसके वास्तविक अर्थ में देखने की बात दोहराई। वीणा के सम्पादक डॉ. श्यामसुन्दर व्यास ने सृजनकार की सांसों को समीधा, रक्त को तर्पण और सृजन को यज्ञ बताते कहा कि जिसके पास परम्परा का पारस है, वह कभी दरिद्र नहीं हो सकता।

- राजस्थान पत्रिका, 13 जनवरी 1999 से

ऑडिशन में प्रतिभाशाली महिलाओं ने दिखाये हूनर

उदयपुर। ब्यूटी पेजेंट ए आर मिसेज इंडिया 2019 प्रतियोगिता के ऑडिशन उदयपुर के होटल रमाडा रिसोर्ट एंड स्पा में हुए। ऑडिशन के चयनकर्ताओ में टीवी एक्ट्रेस पूजा बेनर्जी, अपर्णा दीक्षित, जिज्ञासा सिंह, बॉलीवुड एवं टीवी एक्टर दिशांक अरोरा तथा इंडियन टेलीविजन प्रोडूसर फांउडर ऑफ पहला कदम सीईओ ए आर एंटरटेनमेंट ग्रुप निवेदिता बासु शामिल थी।

पहले राउंड में सभी प्रतिभागियों ने रैंप पर वाक कर अपने परिचय के साथ चयनकर्ताओं के सवालों के जवाब दिये। दूसरे टैलेंट राउंड में प्रतिभागिओं द्वारा प्रस्तुत किये गए डांस, सिंगिंग, एक्टिंग ने चयनकर्ताओं का मन मोह लिया। तीसरे राउंड में प्रतिभागियों ने चयनकर्ताओं द्वारा पूछे गए सवालों का बड़ी बेबाकी से जवाब दिया।

एआर एंटरटेनमेंट ग्रुप के आशीष राय ने कहा कि अन्य पेजेंट के विपरीत, यह भारत का एकमात्र पेजेंट है जहाँ प्रतियोगिता के दौरान या प्रतियोगिता के बाद प्रतियोगियों से कोई शुल्क या छिपा शुल्क नहीं लिया गया। इस वर्ष एआर मिसेज इंडिया पेजेंट पूरे भारत में हो रहा है और इसका निर्माण और संचालन एआर एंटरटेनमेंट ग्रुप द्वारा किया जा रहा है। इस फर्म की सीईओ श्रीमती निवेदिता बसु हैं जो पहला कदम (एनजीओ पार्टनर) की संस्थापक हैं। ए आर मिसेज इंडिया 2019 का ग्रैंड फिनाले सभी शहरों में ऑडिशन पूरा करने के बाद मुंबई में आयोजित किया जाएगा। सोशल मीडिया और समाचार चैनलों के माध्यम से अधिक से अधिक जागरूकता फैलाई जायेगी ताकि अधिक से अधिक महिलाओं तक पहुंचा जा सके। विजेता को ए आर मिसेज इंडिया 2019 की पहली विजेता का ताज और टैग मिलेगा। आशीष राय ने कहा कि आर मिसेज इंडिया ने नारा दिया है - 'शी कैन शी विल'। हम उन सभी विवाहित महिलाओं को मौका देना चाहते हैं, जिन्होंने हमेशा अपने बचपन को प्रसिद्धि, नाम और सफलता के साथ जीतने की कामना की है। उदयपुर में आयोजित हुए ऑडिशन से पूर्व लखनऊ, पुणे, दिल्ली, गुवाहाटी, कोलकाता, जयपुर, चंडीगढ़, देहरादून, गुरुग्राम में ऑडिशन हो चुके हैं और अब जालंधर, बैंगलोर, हैदराबाद, गोवा में ऑडिशन होंगे।

शब्द रंजन
उदयपुर, शनिवार 01 जून 2019

सम्पादकीय

बंधन और बे-बंधन का विवाह

मनुष्य को सामाजिक प्राणी कहा गया है। इस अर्थ में भी कि वह अपने जीवन साथी के साथ निर्वाह करे। अकेले का कोई समाज नहीं होता। अकेला व्यक्ति खुशहाल भी नहीं रह सकता। विभिन्न जातियों में नर-नारी के परिणय सूत्र में बन्धने यानी विवाह करने की अलग-अलग प्रथाएं हैं।

कहीं पुरुष प्रधान समाज में दहेज प्रथा है तो लड़की प्रधानता के कारण दापा प्रथा भी है। चोरी छिपे बाल विवाह की प्रथा अब भी कायम है। गर्भावास में ही आपसी सगपण तय करने, पगड़ी अथवा खाण्डे के साथ विवाह रचाने की भी कई घटनाएं हुई हैं।

विवाह बन्धन में बन्धे बिना स्वेच्छा से जीवन साथी का चयन कर अन्त तक साथ रहना और इस दौरान बेटे-बेटियों तथा पोते-पोतियों का परिवार बसाना सुनकर बड़ा अजीब लगता है लेकिन गरासिया जनजाति में लिव इन रिलेशनशिप की परम्परा बड़े स्वस्थ एवं सुखद रूप में देखने को मिलती है। आबू के आसपास गरासियों की सघन बस्ती है और मजेदार बात यह है कि उनका वह देश ही कुंवारों का देश कहलाता है जिसमें इक्के-दुक्के परिवार ही मिलेंगे जो विधिवत विवाह कर जीवन बसर कर रहे हों बाकी तो सभी कुंवारे रहकर लिव इन रिलेशनशिप में हैं।

अभी हाल ही में एक ऐसी ही अनोखी अनूठी शादी गुजरात सीमा पर बसे कोटड़ा की सड़ा पंचायत के राजपुर गांव में सम्पन्न हुई। इस गांव में गुजरात के लांबड़िया के मालवास गांव के निवासी 75 वर्षीय गमनाभाई सोलंकी बारात लेकर आए और 68 वर्षीय बणजारीदेवी से विवाह-सूत्र में बन्धे।

दोनों वर्षों से लिव इन रिलेशनशिप के अन्तर्गत जीवन यापन कर रहे थे। इस बीच इनके पांच पुत्र और 2 पुत्रियों ने जन्म लिया। सबसे बड़ा पुत्र भारतीय सेना में सेवारत है जिसके एक पुत्र और तीन पुत्रियां हैं। ये सब भी इस विवाह के साक्षी बने।

यह अच्छा पक्ष है कि सामाजिक स्वीकृति से इस तरह के आपसी सम्बन्ध स्थापित होते हैं और परिवार बढ़ते-बसते रहते हैं। बहुत से तो शादी नहीं भी कर पाते हैं। अपने को ऊंचे समझने वाले समाजों में आराम से जीवन यापन करने वाले ऐसे उदाहरण नहीं मिलेंगे। उन समाजों में बहुत से लड़के और उनसे भी अधिक लड़कियां कुंवारी हैं। ऐसे समाजों में कुंवारा रहकर जीवन यापन करना अच्छा नहीं समझा जाता।

डेबिट लेनदेन में 23 प्रतिशत की वृद्धि

उदयपुर। भारतीय बाजार में कार्ड के उपयोग की शुरुआत से देखे तो हमने काफी लम्बा सफर तय किया है। आज 971 मिलियन क्रेडिट और डेबिट कार्ड लोगों के हाथों में है, जिनमें से ज्यातर पिछले तीन सालों में शहरों के अलावा गांवों और कस्बों में समान रूप से जारी हुए। भारत और दक्षिण एशिया के लिए वीजा ग्रुप कंट्री मैनेजर, टीआर रामचंद्रन ने डेबिट कार्ड के उपयोग पर कहा कि डिजिटल रूप से विकसित होते भारत में पिछले 12 महीनों में डेबिट लेनदेन में 23 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। यह उत्साहवर्धक संकेत है कि लोग अपने कार्ड का इस्तेमाल पहले से ज्यादा और अधिक आत्मविश्वास से कर रहे हैं।

डिजिटल भुगतान उपकरणों के उपयोग में वृद्धि ऑनलाइन और ऑफलाइन व्यापारिक स्थलों पर हुई है। इससे पहले, कार्ड का उपयोग मुख्य रूप से महँगी चीजें खरीदने या एटीएम से नकद निकासी के लिए किया जाता था। विडंबना यह थी कि ऑनलाइन खरीदारी का 80 प्रतिशत भुगतान कैश ऑन डिलीवरी द्वारा किया जाता था। 2016 के अंत में, विमुद्रीकरण से बड़ी संख्या में लोग निष्क्रिय कार्डों को उपयोग करने के लिए प्रेरित हुए। लोग अब कार्डों को ई-कॉमर्स, किराने का सामान, फोन बिल और कैब के भुगतान के लिए ऑनलाइन उपयोग करते हैं। ऑफलाइन भी, डेबिट कार्ड व्यापक रूप से छोटे और बड़े आइटम खरीदने के लिए उपयोग किए जाते हैं। डिजिटल भुगतान का यह बदलाव सिर्फ एक शहरी घटना नहीं है। छोटे शहर और टियर 2 और टियर 3 शहर भी तेजी से डिजिटल हो रहे हैं।

प्रतापसिंह लेकसिटी प्रेस क्लब के अध्यक्ष बने

उदयपुर। लेकसिटी प्रेस क्लब के सम्पन्न हुए चुनाव में प्रतापसिंह राठौड़ दूसरी बार प्रेस क्लब के

अध्यक्ष बने। चुनाव अधिकारी अरुण व्यास के अनुसार अध्यक्ष पद की दौड़ में प्रमोद गौड़ भी शामिल थे। चुनाव में 154 मतदाताओं में से 141 ने अपने मत का उपयोग किया। इसमें प्रतापसिंह राठौड़ को 107 तथा प्रमोद गौड़ को 33 मत मिले। एक मत निरस्त हुआ।

चुनाव अधिकारी ने प्रतापसिंह को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया। प्रतापसिंह ने सभी पत्रकार साथियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया और विश्वास दिलाया कि सबको साथ लेकर चलेंगे। चुनावी प्रक्रिया के दौरान लेकसिटी प्रेस क्लब के कई पूर्व अध्यक्ष, वरिष्ठ पत्रकार, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, ऑनलाइन मीडिया एवं प्रिंट मीडिया से जुड़े पत्रकार उपस्थित थे।

दुबई में एक्सीलेंस अवार्ड का रंगारंग आयोजन

14 से 20 मई तक दुबई में दुबई एक्सीलेंस अवार्ड 2019 का रंगारंग आयोजन व पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। दुबई स्थित होटल आर्चिडव्यू में शाही परिवार से संबंधित हिज एक्सीलेंसी सुहैल मोहम्मद अल जरूनी के मुख्य आतिथ्य तथा श्री गुलरेज आजम के विशिष्टि आतिथ्य में यह आयोजन सम्पन्न हुआ।

इस कार्यक्रम में प्रमुख रूप से उदयपुर की टीवी एक्ट्रेस संजना

फड़के, पद्मनी बाग एवं रिसोर्ट के डॉ. पृथ्वीराज चौहान, सरस्वती नर्सिंग के गिरीश शर्मा, प्रख्यात ज्योतिषी रमेश आचार्य, प्रोम्प्ट इंफ्राकॉम के सैयद तबरेज अली, वर्धमान ओपन यूनिवर्सिटी की रश्मि बोहरा, वास्तु विशेषज्ञ डॉ. कल्पना शर्मा, फस्ट इंडिया न्यूज के डॉ रवि शर्मा, जीवनतारा रिसोर्ट के सरदारसिंह होड़ा, जनजाति विभाग के एमडी लियाकत हुसैन, पार्श्वकल्ला के डॉ. तुक्तक भानावत तथा एस्पायर टेक्नो सोल्यूसंस के हिमांशु वर्मा का सम्मान किया गया।

स्वागत भाषण नंदिनी मीडिया हाऊस के अल्पेश लोढ़ा ने दिया जबकि धन्यवाद की रस्म एस. के. एस. मीडिया के सुरेश शर्मा ने निभाई।

मुख्य अतिथि हिज एक्सीलेंसी सुहैल मोहम्मद अल जरूनी ने सभी विजेताओं को बधाई देते हुए कहा कि इस तरह के कार्यक्रम से पूरे देश के लोगों का सम्मान बढ़ता है तथा अन्य लोगों में भी प्रतिस्पर्धा की भावना बढ़ती है। विशिष्ट अतिथि गुलरेज आजम ने कहा कि ऐसे आयोजन आपसी सौहार्द के साथ-साथ एक-दूसरे की संस्कृति के आदान-प्रदान को बढ़ावा देते हैं। यात्राकाल में दुबई के ऐतिहासिक एवं शैक्षणिक स्थानों का भ्रमण कराया गया। **-अल्पेश लोढ़ा**

पत्र-पिटारी

शब्द रंजन जब भी मुझे मिलता है, मैं उस दिन अपने में बड़ी ताजगी महसूस करता हूं और कई प्रकार की जानकारियों से समृद्ध हो जाता हूं जो जीवन में एक नया सोच और ऊर्जा देती है।

15 मई 2019 के अंक के अन्तिम पृष्ठ पर डॉ. कहानी भानावत का गांधी ने चलाया चरखला लेख पढ़कर मुझे अपने अतीत की कई स्मृतियां हो आईं जब मैं भी चरखा चलाता था और उसके कारण मुझे एक चरखा ही इनाम में दिया गया था। किसी भी महापुरुष को जबरन याद नहीं किया जाता। वह तो हमारे दिलों में बसा रहता है जो हमारे कार्य-व्यवहारों से अनायास सहज ही हमारी स्मृति में उतर आता है।

आज चारों ओर से रोजगार की समस्या का हल्ला हो रहा है पर उस समय चुपचाप बिना किसी हल्लेगुल्ले के चरखे ने अनेक परिवारों को जीने का सम्बल दिया था। एक चरखे के कारण अनेक लोग

स्वतंत्रता आंदोलन में कूद गये। अनेक खादी पहनने लग गये। अनेकों ने स्वदेशी वस्तुओं को अपनाया। एक चरखे को लेकर देश के प्रत्येक अंचल में कारीगरों ने अपने-अपने ढंग से चरखे का निर्माण किया। चरखे पर अनेक गीत लिखे गये। अनेक कथाएं सर्जित हुईं। अनेक घटनाएं और ऐसे प्रसंग बने जो भारतीय संस्कृति के उल्लेखनीय फलदायी कारक बने।

कहां-कहां नहीं पहुंचा चरखा। हम तो कल्पना ही नहीं कर सकते। महिलाएं चरखे को लेकर अधिक सक्रिय और सर्जनहार बनीं। चरखे के बहाने डॉ. कहानी ने कितनों को याद कर क्या-क्या नहीं कह दिया। इसे पढ़कर मैं अपने लेखन को भी पुनर्जीवित, पुनर्गठित कर रहा हूं।

चरखा कैसे कण-कण में समाविष्ट हो गया। उसकी धुन में मैं एकाग्र हो जाता। शरीर का ध्यान ही नहीं रहता और अपने काम में लगा रहता। एक चरखा हमारे पूरे शरीर के अंग-प्रत्यंग को आंदोलित करता हुआ हमारे में हृदयस्थ हो जाता है। इसकी महिमा निसंदेह अपरम्पार है।

प्रथम आलेख चित्तौड़ के किले पर देव-पुरुषों का रंगोत्सव में देव-पुरुषों का जो आंखों देखा चित्रण किया है वह हर एक के बूते का नहीं है पर स्वीकार सभी करते हैं। अनेक ऐसे महापुरुषों और साहित्य मनीषियों ने देवात्माओं को स्वीकार किया है और किसी न किसी माध्यम से उनका प्रत्यक्षीकरण कर संवाद भी किया है।

यह तर्क का विषय नहीं है और न कोई कौतुकी करतबों तथा चमत्कारों एवं रहस्यों का है। विश्वासपूर्वक हृदय में बिठाने का है। अपनी कहानियों और उपन्यासों में वर्षों पूर्व मैंने भी अनेक अनुभूतिपरक संकेतों का जो लेखन किया था उसकी पुनर्पीठिका हुई है। बहुत-बहुत बधाई।

- डॉ. राजेन्द्रमोहन
भटनागर, उदयपुर

वार्षिक उत्सव 'क्षण' आयोजित

उदयपुर। पीआईएमएस में वार्षिक उत्सव क्षण- 2019 का आयोजन किया गया। इस आयोजन में विभिन्न सांस्कृतिक, साहित्यिक और खेल-कूद गतिविधियों का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि सीएमएचओ डॉ. दिनेश खराड़ी थे। पीआईएमएस के चेयरमेन आशीष अग्रवाल ने छात्रों को अच्छी तरह से अध्ययन करने और अच्छे डॉक्टरों के रूप में समाज की सेवा करने के लिए प्रोत्साहित किया। प्रिंसिपल डॉ. चन्द्रा माथुर ने जीवन के प्रत्येक क्षण पर प्रकाश डाला। मेडिकल डायरेक्टर डॉ. एस के गौतम ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

स्मृतियों के शिखर (76) : डॉ. महेन्द्र भानावत

हास्यरसी ही थे काका हाथरसी

अपने मूल नाम से चर्चित नहीं होकर चलताऊ नाम से चर्चित होनेवाले सृजनधर्मियों में एक नाम काका हाथरसी का भी है। प्रभूलाल गर्ग उनका मूल नाम था। हाथरस में उन्होंने संगीत नाम से मासिक पत्र प्रारंभ किया जिसका प्रकाशन अब भी हो रहा है।

काका हास्यरस के बुलंद, बेबाक और बड़े कवि थे। उनके हास्य में व्यंग्य की मार नहीं थी, रंग की फटाफट की बौछारें रहीं। वे बौछारें भी प्रत्युत्पन्न मति की त्वरित बौछारें थीं जो श्रोता को लोटपोट कर देतीं। मार रहती पर बड़ी मीठी, मजा देने वाली, मनमौजी। जी की कली खिला देने वाली। इसमें स्वयं काका भी मजा लेते। दूसरे तो लेते ही।

कवि काका का हास्य सदैव चार्ज हुआ रहता। उदयपुर में वे कई बार आये। जब-जब भी आये, कला मंडल अवश्य आये। वे आते तो फूलझड़ी छूट जाती। अपनी कविताओं के माध्यम से काका ने पूरे देश में हास्य बिखेरा। हास्य बांटा। मैंने हास्य बांटनेवाले अन्य कवियों को भी नजदीक से देखा।

गोपाल प्रसाद व्यास, रामरिख मनहर को भी सुना। सुरेन्द्र शर्मा को भी देखा। ये सब अलग-अलग थे। काका इनसे भी अलग रहे। काका ने जितना भी लिखा, पद्य लिखा। कविताएं लिखीं। तुकवालीं। हंसिकाएं, पैरोडियां, हंसगुल्ले लिखे। गद्य या तो लिखा नहीं और लिखा भी तो पद्य की चासनी दिये, पद्य का मसाला भरभराते हुए लिखा।

मैं भारतीय लोककला मंडल से प्रकाशित मासिक रंगायन तो काका को भिजवाता ही, अन्य प्रकाशन भी उन्हें भेजे जाते। कला मंडल के संस्थापक पद्मश्री देवीलाल सामर की षष्टिपूर्ति पर 'गेहरो फूल गुलाब रो' नाम से मेरे संपादन में एक ग्रंथ प्रकाशित हुआ था। इसकी प्रति काका को भेजी। उत्तर में उन्होंने मुझे पोस्टकार्ड लिखा। 29 अक्टूबर 1972 को लिखे इस कार्ड में, गद्य और पद्य दोनों में, काका ने चुटकी दी। लिखा-

'गेहरो फूल गुलाब रो' मिल्यो।
हृदय कमल खिल्यो।
ऐसो ही जमतो रहे सिलसिल्यो।

फिर ये पंक्तियां लिखीं-

सामर और महेन्द्र पर कृपा करे सर्वेश।
कला और साहित्य से सजे हमारा देश।।

इससे पूर्व अभिनंदन ग्रंथ के लिए अपने हृदयोद्‌गार स्वरूप काका ने यह कुंडली लिख भेजी-

कला पारखी गुणीजन करें सभी स्वीकार।
अभिनंदित होते रहें 'सामर' बारम्बार॥
सामर बारम्बार कि जितने नभ में तारे।
उतने वर्षों जीवें देवीलाल हमारे॥
कहँ काका, संगीत कला के उन्नायक हैं।
लोकसंस्कृति, नृत्य, नाट्य के उद्धारक हैं॥

काका पर एक अभिनंदन ग्रंथ निकालने की योजना बनी। मेरे पास उन पर लिखने के लिए पत्र आया।

मैंने 'कवियों में कवि काका जिनका लगता रहे ठहाका' शीर्षक से अपना लेख भेजा साथ ही यह भी लिखा कि काका अपनी जन्मकुंडली लिख भेजें तो मेरे एक परिचित मित्र से मैं उसके आधार पर फलादेश भिजवाऊं। मेरा पत्र पाकर काका ने 8 मार्च 1976 को अपनी कुंडली भेजी और उसके नीचे अपना जन्म 18 सितम्बर 1906 ई. आश्विन कृष्णा 15 संवत् 1963 वि. तथा नाम प्रभूलाल गर्ग (काका हाथरसी) भी लिख भेजा।

मैंने उस कुंडली के आधार पर अपने गांव कानोड़ के पं. उदय जैन के सुपुत्र मदनमोहन जैन 'पवि' से फलादेश लिख भेजा। उस फलादेश को पाकर काका ने 23 मार्च 1976 को मुझे यह पोस्टकार्ड लिखा-

श्री भानावतजी,

आपका भेजा हुआ कुंडली का फलादेश प्राप्त हुआ। यदि ठीक निकला तो अगले जन्म में लाखों स्वर्ण मोहर आपको सप्लाई करने की चेष्टा करूंगा। कृपया अगले जन्म का अपना पता भी लिख भेजिये। मेरा पता तो अपको मालूम है ही।

सन् 1980 में 'कोई-कोई औरत' नाम से मेरी अतुकान्त कविता की पुस्तक प्रकाशित हुई। इसकी भूमिका डॉ. प्रभाकर माचवे ने लिखी। इसकी एक प्रति मैंने काका को भेजी। उन्होंने एक पोस्टकार्ड में शुभकामना स्वरूप 18 फरवरी 1981 को निम्नांकित चार पंक्तियां लिख भेजीं-

जाग उठेगी मधुर कल्पना, कोई सोई सोई।
देखेंगे जब 'भानावत' की औरत कोई कोई॥
'कोई कोई औरत' तो इस दुनिया पर छाई है।
जैसे लता और इंदिरा ने शुहरत पाई है॥

काका को भारत सरकार ने 'पद्मश्री' से विभूषित किया। इस पर मैंने उनको बधाई पत्र भेजा। उत्तर में उन्होंने काकी को निशाना बनाते हुए हंसी का लोटपोट ही भेज दिया। चार कुंडलियों वाली उस कविता में पहली दो कुंडलियों में काकी पद्मश्री नामक किसी प्रेमिका को पाकर काका पर खिन्न है। कुंडलियों में काका द्वारा काकी की प्रतिक्रिया व्यक्त की गई है जो इस प्रकार है-

(1)

मिली बधाई आपकी, धन्यवाद श्रीमान।
इसे मानिए हास्यरस-हिन्दी का सम्मान।।
हिन्दी का सम्मान, मुझे इस योग्य बनाया।
प्रशंसकों-मित्रों ने, अलंकरण दिलवाया।।
कहं काका कवि, इतनी कृपा और कर दीजे।
काकी पर प्रतिक्रिया क्या हुई, यह सुन लीजे।।

(2)

तार बधाई के मिले, फोन करे टन-टन्न।
पद्मश्री का नाम सुन, काकी हो गई सन्न।।
काकी हो गई सन्न, बड़ी चर्चा है जिसकी।
क्या करती है काम, उमर है कितनी उसकी।।
उमरीका से यही सीखकर आए हो क्या?
मेरे लिए सौत का तोहफा लाए हो क्या?

(3)

अस्सी साल होरहे, फिर भी ऐसे काम।
शर्म बुढ़ापे की करो, होय नाम बदनाम॥
होय नाम बदनाम, चाल नहिं चलने दूंगी।
भारतीय नारी हूं, दाल न गलने दूंगी॥
खबरदार जो इस घर में, रक्खी वह लाकर।
टांग पकड़ उस दुष्टा को करदूंगी बाहर॥

(4)

यह कहकर रोने लगी, हाय हाय भगवान।
कहां गई इनकी अकल, कहां उड़गया ज्ञान॥
कहां उड़गया ज्ञान, तरूण कवि ने समझाया।
आग उगलती काकीजी को धैर्य बंधाया॥
मेरी भोली अम्मा, तुम काहे को झींको।
औरत नहीं, उपाधि मिली है काकाजी को॥

यह कविता लिखकर काका ने तो मजे लिए ही, काकी ने भी खूब मजे लिए। काका ने इसके माध्यम से कई मजमे खड़े किये। कई बार मंचों पर इससे रस-वर्षा की और वंसमोर द्वारा अपार जनसमूह का मन-रंजन किया।

कविता की ताकत क्या होती है, उसकी सत्ता कितनी असरकारक होती है, इसे उसका रचनाकार ही ठीक से बता सकता है। छह-सात दशक तक निरन्तर कविताओं में जीनेवाले काका ने अनगिनत लोगों को जीवन रस दिया। काका की कविताएं सुन वे भी हंसे जो कभी नहीं हंस पाए। वे भी हंसे जो दुख का सागर ही बने रहे। काका ने कई संस्मरण सुनाए, हंसते, खिलखिलाते, लोटपोट होते लोगों के।

ऐसा भी हुआ जब घर पहुंचने पर भी काका की कविता को मन ही मन याद कर बच्चे अपनी हंसी नहीं रोक पाए तब घर में हंसी बर्दाश्त नहीं करनेवाले डैड से डंडे खाने पड़े। ऐसा भी हुआ जब अस्पताल से ऑपरेशन से छुट्‌टी पा कोई रोगी सीधा काका के सम्मेलन में पहुंच गया और उनकी कविता सुन हंसी न रोकने पर पेट के टांके तोड़ बैठा।

कवि सम्मेलनों में काका का जब-जब भी उदयपुर आना हुआ, वे भारतीय लोककला मंडल अवश्य आये। उनके आते ही हंसी-ठिठोली का दौर शुरू हो जाता। एकबार काका को मेरे अभिन्न साथी नोबल्स कॉलेज में आमंत्रित करना चाहते थे। काका से मैंने वहां जाने की स्वीकृति ली थी।

प्रो. देवकर्णसिंह राठौड़ और डॉ. विश्वंभर व्यास उन्हें लेने आये। काका बोले, मैं तो समझ रहा था कि आपने भी मेरी तरह दिल्लगी की है। ये तो सचमुच में ही लेने आ गये पर भानावतजी, आज मेरे जीवन के साठ वर्ष पूर्ण हो रहे हैं।

मैंने उन्हें तत्काल बधाई दी तो वे बोले, सो तो अच्छा ही है किन्तु सर्वाधिक अच्छा तो यही होगा कि एक वर्ष के एक रुपये से तो मेरा आवभगती सम्मान हो।

प्रो. देवकर्णसिंह को मैंने इशारा दिया तो वे काका से बोले, पूरा कॉलेज आपको देखने-सुनने की उत्कंठा लिये है। आप पधारो तो हमारा गौरव बढ़ेगा। मेवाड़ की मुळक और मेहमानदारी से जो भी आया, कायल ही हुआ है। काका ने मुझे बताया भी कि वहां जो कार्यक्रम रहा वह उनके जीवन का स्मरणीय, आत्मीय, ओपमान तथा अंगरसी ही रहा।

काका बोले- भानावतजी, इसकी भी खोज की जाय कि सभी रसों में कौनसा रस कविता में श्रोताओं को सर्वाधिक हंसी, दिल-लगी और दिल्लगी देता है। श्रोता किसे सुनना अधिक पसंद करते हैं। इस जन्म में ही क्यों, अगले जन्म में भी मैं जहां भी होऊंगा, कविता सुनाता, हंसी, मसखरी और दिल्लगी से हास्य वर्षा करता ही मिलूंगा।

वस्तुतः काका हाथरसी ही नहीं, हास्य लुटानेवाले हास्यरसी भी थे।

मोदी अब वाकई बनें प्रधानमंत्री

-डॉ. वेदप्रताप वैदिक-

मुझसे देश-विदेश के टीवी चैनलों और विपक्षी नेताओं ने पूछा कि मोदी की इस प्रचंड विजय का रहस्य क्या है? आप

उसकी व्याख्या कैसे करते हैं? मेरा पहला उत्तर तो यह है कि भारत का विपक्ष बिना दूल्हे की बारात था। इस बारात के दर्जनों बरातियों को एक दुल्हन एक साथ वरमाला कैसे पहना सकती थी? भाजपा की बारात में सिर्फ एक दूल्हा था, नरेंद्र मोदी। जनता ने उसे माला पहना दी।

भारत मूर्तिपूजकों का देश है। भाजपा के पास एक भव्य और मुखर मूर्ति थी, जबकि विपक्ष निर्गुण-निराकार था। इस मूर्ति को विपक्षी लोग काणी-खोड़ी कहें, लूली-लंगड़ी कहें, चोर कहें, मौत का सौदागर कहें, चाहे जो कहें लेकिन फिर भी वह एक सगुण-साकार मूर्ति थी जबकि विपक्ष के पास तो कुछ था ही नहीं। जनता अपनी माला किसे पहनाती? कोई अखिल भारतीय नेता मोदी की टक्कर में खड़ा था क्या?

1977 में इंदिरा गांधी की टक्कर में जयप्रकाश और मोरारजी देसाई थे और राजीव गांधी की टक्कर में विश्वनाथ प्रतापसिंह और चंद्रशेखर थे। राहुल गांधी और प्रियंका का स्तर थोड़ा ऊंचा तो उठा लेकिन वे क्या मोदी को टक्कर देने लायक थे? मोदी की टक्कर में जितने नेता थे, वे सब प्रांतीय नेता थे। इसीलिए लोगों ने इस चुनाव को संसद का चुनाव बनाया। विधानसभाओं का नहीं। राहुल अपने प्रांत में ही पटकनी खा गए।

पिछले पांच साल में मोदी ने इतनी भयंकर भूलें कीं हैं कि यदि कोई राष्ट्रीय नेता उनकी टक्कर में खड़ा हो जाता तो भाजपा की दशा कांग्रेस-जैसी हो जाती। यह चुनाव भाजपा और कांग्रेस के बीच नहीं हुआ है। यह हुआ है मोदी और राहुल के बीच। यह अमेरिका की राष्ट्रपति प्रणाली की नकल पर हुआ है। मैं पिछले कई दिनों से जो कह रहा हूं, इसका नतीजा वही हुआ है। वे अत्यंत सफल प्रचारमंत्री सिद्ध हुए हैं। अब वे वाकई पधानमंत्री बनकर दिखा सकते हैं।

लोग मुझसे पूछ रहे हैं कि क्या ये चुनाव-परिणाम मोदी को हिटलर नहीं बना देंगे? क्या अब हम एक निरंकुश तानाशाह को नहीं झेलेंगे? इस मामले में मैं बड़ा आशावादी हूं। मेरा मानना है कि पेड़ पर जब फल लगते हैं तो वह अपने आप झुकने लगता है। मोदी की कोशिश अब एक बेहतर प्रधानमंत्री बनने की होगी। अब उनमें विनम्रता, शिष्टता और अनुभवजन्य दूरदर्शिता देखने को मिल सकती है।

हालांकि मेरी इस बात से न तो भाजपा के नेता सहमत हैं, न कांग्रेस के। पाकिस्तान के जो फौजी जनरल आज मेरे साथ चेनलों पर बहस कर रहे थे, वे तो बिल्कुल भी सहमत नहीं थे लेकिन लगता है कि अब मोदी का आत्मविश्वास इस लायक जरुर हो जाएगा कि वे अपने से अधिक योग्य लोगों को बर्दाश्त करना सीख लेंगे।

गीता गैलरी शोरूम का शुभारंभ

उदयपुर। गीता एल्युमिनियम ने उदयपुर में विनायक फेंस्टर सिस्टम के सहयोग से गीता गैलरी शोरूम का शुभारंभ किया है। शोभागपुरा में स्थित विनायक फेनस्टर सिस्टम्स के नाम से जाने जाने वाले खुदरा शोरूम में एल्युमिनियम प्रणाली की खिड़कियां और दरवाजे हैं जो ग्राहकों के लिए एक विशिष्ट शैली और छाया की खिड़कियों का चयन कर सुविधाजनक बनाते हैं।

गीता एल्युमिनियम (गीता ग्रुप) के कार्यकारी निदेशक कुशाल बजाज ने कहा कि गीता गैलरी के माध्यम से इस महत्वपूर्ण खरीद से पहले होम बायर्स को बारीकियों को समझने और महसूस करने में मदद करता है। यह ग्लास, एल्यूमीनियम की गुणवत्ता पर विशेषज्ञ सहायता प्रदान करता है और दरवाजे, खिड़कियों के लिए स्थापना सेवाओं में भी मदद करता है। पर्यावरणीय स्थिरता की ओर एक नजर के साथ, कंपनी केवल एल्युमीनियम का उपयोग करने में विश्वास करती है क्योंकि यह हल्के वजन और सौ प्रतिशत पुनर्नवीनीकरण है।

कुशाल बजाज ने कहा कि एल्युमीनियम एक्सट्रूजन बाजार के साथ वर्तमान में लगभग चार लाख मीट्रिक टन है। हमने अगले वर्ष के अंत तक कुल 50 शोरूमों के विस्तार की योजना बनाई है। सर्वे सपोर्ट, डिजाइन कंसल्टेशन, फैब्रिकेशन, इन-हाउस डिलीवरी, इंस्टालेशन और आफ्टर-सेल्स सर्विस सहित भारतीय उपमहाद्वीप में सभी फेनस्टेशन की जरूरतों के लिए गीता एल्युमीनियम एक स्टॉप सॉल्यूशन प्रदान करता है। वर्तमान में इसकी मुंबई में 6, पुणे में 2 और नासिक, कोल्हापुर, औरंगाबाद, शिलांग, इंदौर, जयपुर, जलगाँव, रायपुर, अहमदाबाद, बारडोली, हिम्मतनगर, गोवा, वडोदरा, कोटा, कोलकाता और कोलकाता में 1-1 गैलरी हैं। भुवनेश्वर, लगभग हर दूसरे महीने टैली में नए शोरूम जोड़ते हैं।

डायबिटीज की दवा 'रेमोग्लिफ्लोज़िन' लॉन्च

उदयपुर। शोध पर आधारित वैश्विक एकीकृत दवा कंपनी, ग्लेनमार्क फार्मास्युटिकल्स लि. (ग्लेनमार्क) ने अपने बिल्कुल नए, पेटेंट संरक्षित और वैश्विक रूप से शोधित सोडियम ग्लूकोज को-ट्रांसपोर्टर (एसजीएलटी2) इन्हिबिटर रेमोग्लिफ़्लोज़िनटैबोनेट (रेमोग्लिफ़्लोज़िन) के लॉन्च की घोषणा की। ग्लेनमार्क फार्मास्यूटिकल्स के अध्यक्ष, इंडिया फ़ॉर्मूलेशन्स, मिडल ईस्ट और अफ्रीका ग्लेनमार्क फार्मास्यूटिकल्स के सुजेश वासुदेवन ने बताया कि दवा वयस्कों में टाइप-2 डायबिटीज के उपचार में काम आती है। ग्लेनमार्क दुनिया की पहली कंपनी है जिसने रेमोग्लिफ्लोज़िन लॉन्च किया है और इस अभिनव दवा का उपयोग करने वाला पहला देश भारत है। ग्लेनमार्क ने भारत में रेमोग्लिफ्लोज़िन को ब्रांड नाम रेमो और रेमोजेन के रूप में लॉन्च किया है। रेमोग्लिफ्लोज़िन एकमात्र एसजीएलटी2 इन्हिबिटर है जो सक्रिय फार्मास्युटिकल इन्ग्रेडिएंट (एपीआई) से लेकर फॉर्मुलेशन तक भारत में ही निर्मित किया जाता है।

रेमोग्लिफ्लोज़िन की कीमत 12.50 रुपये प्रति टैबलेट है जिसे दिन में दो बार लेना होता है। यह भारत में उपलब्ध एसजीएलटी2 इन्हिबिटर्स की तुलना में 50 प्रतिशत कम है। वर्तमान में, भारत में एसजीएलटी2 इन्हिबिटर की प्रतिदिन की चिकित्सा लागत लगभग 55 रुपये है, जबकि रेमोग्लिफ्लोज़िन एसजीएलटी2 इन्हिबिटर्स पर डायबिटीज रोगियों के लिए प्रति वर्ष लगभग 11,000 रुपये की बचत प्रदान करता है। ग्लेनमार्क ने चरण-3 नैदानिक परीक्षणों को सफलतापूर्वक पूरा करने के बाद रेमोग्लिफ़्लोज़िनटैबोनेट 100 मिलीग्राम के लिए रेग्युलेटरी अनुमति प्राप्त की है। रेमोग्लिफ्लोज़िन का विश्व स्तर पर 26 नैदानिक परीक्षणों में अध्ययन किया गया है, जिसमें विभिन्न जातीयताओं के लगभग 2,500 रोगी शामिल हैं। रेमोग्लिफ्लोज़िन की खोज और विकास जापानी फर्म किसेई फार्मास्युटिकल कंपनी लि. ने किया गया था और बाद में ग्लैक्सोस्मिथक्लाइन पीएलसी और ग्लेनमार्क के सहयोगी बीएचवी फार्मा द्वारा विकसित किया गया। ग्लेनमार्क अपेक्षाकृत कम लागत पर नवीनतम उपचार विकल्पों तक भारत में डायबिटीज रोगियों की पहुंच बनाने में अग्रणी रहा है और रेमोग्लिफ्लोज़िन के लॉन्च के साथ, कंपनी का उद्देश्य एसजीएलटी2 इन्हिबिटर्स तक रोगियों की पहुंच बढ़ाना है क्योंकि ये दवाएं प्रभावी डायबिटीज प्रबंधन के लिए लाभकारी साबित हुई हैं। इंटरनेशनल डायबिटीज फेडेरेशंस डायबिटीज एटलस 2017 के अनुसार, भारत में लगभग 7 करोड़ 20 लाख वयस्कों के डायबिटीज से पीड़ित होने का अनुमान है।

जेके टायर की बिक्री में 24 प्रतिशत की बढ़ोतरी

उदयपुर। जेके टायर एंड इंडस्ट्रीज लि. (जेकेटीआईएल) ने 31 मार्च 2019 को समाप्त हुए वित्तीय वर्ष के लिए अपने नतीजों की घोषणा की। इस वर्ष बिक्री 24 प्रतिशत बढ़कर 10,370 करोड़ रुपए रही, जबकि साल का परिचालन लाभ 1,916 करोड़ रुपए रहा, जोकि 35 प्रतिशत अधिक है। इस वर्ष का समेकित कर पश्चात लाभ 270 करोड़ रुपए रहा। चौथी तिमाही की बिक्री भी समान अवधि की तुलना में 18 प्रतिशत बढ़कर 2,706 करोड़ रुपए रही।

कंपनी के चेयरमैन और प्रबंध निदेशक डॉ. रघुपति सिंघानिया ने कहा कि वित्तीय वर्ष 2019 वाकई कंपनी के लिए एक ऐतिहासिक वर्ष रहा। जेके टायर की बिक्री ने पिछले साल की तुलना में 24 प्रतिशत की जबरदस्त बढ़ोतरी हासिल करके 10,000 करोड़ रुपए का आंकड़ा पार कर लिया और उद्योग की तरक्की को भी पीछे छोड़ दिया। कच्चे माल की ऊंची कीमतों के चलते चौथी तिमाही की लाभप्रदता प्रभावित होने के बावजूद, वर्ष का परिचालन लाभ सकल रूप से 35 प्रतिशत बढ़ा।

साल की दूसरी छमाही में ऑटोमोटिव सेक्टर में मंदी के बावजूद जेके टायर का वॉल्यूम 20 प्रतिशत बढ़ा। हाल ही में अधिगृहीत अपनी अनुषंगी कैवेन्डिश की क्षमता के बेहतर इस्तेमाल की बदौलत कंपनी विभिन्न श्रेणियों में अपनी मौजूदगी बढ़ा सकी।

एरियल को मिला गिनीज वर्ल्ड रेकॉर्ड्स सर्टिफिकेट

उदयपुर। एरियल इंडिया ने बेटों को लार्जेस्ट लॉन्ड्री लेसन प्रदान करने का प्रयास किया और गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड सर्टिफिकेट हासिल किया। इस अभियान में बॉलीवुड अभिनेता अनिल कपूर, ने उदाहरण द्वारा और प्रतिभागियों को प्रोत्साहित कर इसका नेतृत्व किया। एरियल ने इस वर्ष की शुरुआत में, वर्तमान पीढ़ी से अपने बेटों की परवरिश भी उसी तरह से करने, जिस तरह से वे अपनी बेटियों की परवरिश कर रहे हैं, के आग्रह के साथ, 'शेयर द लोड' अभियान के तीसरे संस्करण को लॉन्च किया। सेलेब्रिटी मां मंदिरा बेदी युवाओं को आवश्यक कौशल प्रदान करने के लिए लार्जेस्ट लॉन्ड्री लेसन में शामिल हुईं और अपने बेटे की परवरिश 'शेयर द लोड' के मूल्यों के आधार पर करने का वचन दिया।

रिकॉर्ड के लिए, 400 बेटे लॉन्ड्री करने के तरीके को सीखने प्रति एकजुटता दिखाने के लिए आगे आए। सोनाली धवन, मार्केटिंग डायरेक्टर एंड फैब्रिक केयर लीडर, पीएंडजी इंडिया ने कहा कि एरियल का मानना है कि पारिवारिक असमानता के कारकों में एक प्रमुख कारक यह है कि आज के बेटों को घर का लोड साझा करने के लिए न सिखाया जाता है और न उन्हें समर्थ बनाया जाता है। एरियल ने लॉन्ड्री के रूप में परिवारों में असमानता के खिलाफ इस अभियान को निरन्तर जारी रखा है।

विराट और रिषभ हिमालयाके ब्रांड एम्बेसडर बने

उदयपुर। हिमालया ड्रग कंपनी ने भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान विराट कोहली और रिषभ पंत को 'हिमालया मेन फेस केयर रेंज' का ऑफिशियल ब्रांड एम्बेसडर बनाया है।

हिमालया ड्रग कंपनी के बिज़नेस हेड – कंज़्यूमर प्रोडक्ट्स डिवीज़न, राजेश कृष्णमूर्ति ने कहा कि हिमालया मेन अच्छा दिखने के नए ट्रेंड में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। विराट और रिषभ युवाओं के आदर्श हैं, इसलिए हमने उन्हें ब्रांड एम्बेसडर बनाया है। अपनी तरह के पहले कमर्शियल में विराट और रिषभ हिमालया मेन के नवीनतम प्रस्ताव, 'लुकिंग गुड...एंड लविंग इट' पर रैप करते दिखेंगे। विराट कोहली ने कहा कि हिमालया भरोसेमंद और मेरा पसंदीदा ब्रांड है। मैं लंबे समय से हिमालया उत्पादों का प्रशंसक रहा हूँ। रिषभ पंत ने कहा कि मुझे हिमालया की मेन्स ग्रूमिंग रेंज का ब्रांड एम्बेसडर बनने पर गर्व है।

अश्वनी गांधी, एसोशिएट जनरल मैनेजर- कंज़्यूमर प्रोडक्ट्स डिवीज़न, हिमालया ड्रग कंपनी ने कहा कि हिमालया मेन पुरुषों की ग्रूमिंग के क्षेत्र में चेहरे की देखभाल, बालों की देखभाल और बीयर्ड की देखभाल करने वाला गो-टू ग्रूमिंग ब्रांड है।

पेट्रोल पावर्ड रेंज रोवर स्पोर्ट की पेशकश

उदयपुर। जगुआर लैंड रोवर इंडिया ने भारत में मॉडल ईयर 2019 रेंज रोवर स्पोर्ट के 2.0 लीटर के पेट्रोल डेरिवेटिव्स लॉन्च करने की घोषणा की है। इसकी कीमत 86.71 लाख रूपये है। यह एस, एसई और एचएसई ट्रिम में उपलब्ध है। नया डेरिवेटिव ट्विन-स्क्रोल टर्बोचार्जर के साथ 2.0 लीटर के पेट्रोल इंजन द्वारा पावर्ड है, जोकि 221 केड्ब्ल्यू का पावर आउटपुट और 400 एनएम का पीक टॉर्क देता है।

रोहित सूरी, प्रेसिडेंट एवं मैनेजिंग डायरेक्टर, जगुआर लैंड रोवर इंडिया लि. (जेएलआरआइएल) ने कहा कि मॉडल ईयर 2019 2.0 लीटर पेट्रोल डेरिवेटिव एक आकर्षक एवं रोमांचक मूल्य पर प्रमुख मॉडल के आकांक्षी वैल्यू को और भी बढ़ायेगी। बेमिसाल दक्षता के साथ ड्राइविंग आनंद, ईधन इकोनॉमी और रिफाइनमेंट को मिलाते हुये रेंज रोवर स्पोर्ट परफेक्ट रूप से पोपोर्शन्ड है। यह डायनैमिक डिजाइन एवं समकालीन अहसास को बेहतर बना रही है।

साथ ही इनमें कई खूबियां भी हैं जैसे कि स्लाइडिंग पैनोरैमिक रूफ और पावर्ड टेलगेट। रेंज रोवर स्पोर्ट को ढेरों रोमांचक खूबियों के साथ पेश किया गया है। इनमें थ्री-जोन क्लाइमेट कंट्रोल, पोटेक्ट, कंट्रोल पो, पार्क पैक, स्मार्टफोन पैक और केबिन एयर आयोनाइजेशन शामिल हैं। रेंज रोवर स्पोर्ट को कंटेम्परारी इंटीरियर और ऐडवान्स्ड फीचर्स इंटरैक्टिव ड्राइवर डिस्प्ले और फुल कलर हेड-अप डिस्प्ले के साथ पेश किया गया है।

कथा-किस्सों के माध्यम से बाल रंजन को बढ़ावा

उदयपुर। एलजीबीटीक्यूआई के विरूद्ध भेदभाव और असमानता को चुनौती देने के लिए द ललित

लक्ष्मी विलास पैलेस में होमोफोबिया, बाइफोबिया, इंटरसेक्सिज्म तथा ट्रांसफोबिया के विरूद्ध अंतर्राष्ट्रीय दिवस मनाया गया। कार्यक्रम के अंतर्गत द ललित एल्फी बुक सीरिज से बच्चों को प्रसिद्ध कहानियां सुनाई गई। इसका उद्देश्य लिंग सम्बंधी रूढ़िवादी अवधारणा के प्रति बच्चों को शिक्षित करना, अभिभावकों को जागरूक बनाना और बेरोकटोक स्वीकार्यता को बढ़ावा देना है। कथा-किस्सों के बाद बच्चों के लिए खेल-तमाशों तथा अभिभावकों के लिए हाई-टी का आयोजन किया गया। द ललित सूरी होस्पिटेलिटी ग्रुप एलजीबीटीक्यूआई के लिए समावेशित अभियान में सबसे आगे रहा है। होमोफोबिया, बाईफोबिया, इंटरसेक्सिम तथा ट्रांसफोबिया के विरूद्ध अंतर्राष्ट्रीय दिवस के आयोजन का मुख्य उद्देश्य यह संदेश फैलाना है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी अस्मिता पर गर्व महसूस करने का अधिकार है।

आदिवासी और.....

(पृष्ठ एक का शेष)

प्रताप को मानसिंह ने आंख का इशारा दिया कि भाग जाओ। पीछे से सेना आरही है। इशारा पाकर प्रताप और मानसिंह दोनों की आंखें भर आईं। सच ही है जब कुल उजड़ रहा होता है तब बोध देना पाप नहीं होता। शेर यदि घायल हो तो वीर उसका शिकार करने की बजाय उसकी रक्षा करना ही अपना कर्त्तव्य समझते हैं।

मेवाड़ अधिपति एकलिंगनाथजी

इशारा पाते ही प्रताप अपना मुकुट बड़ीसादड़ी के झाला मान को दे युद्धभूमि से कूच कर गये। उनके पीछे-पीछे चेतीबाई भी बड़ी चतुराई से निकल चली। मानसिंह ने शक्तिसिंह को संकेत दिया- मैं तो मजबूर हूं पर तुम तो स्वतंत्र हो। जाओ, अपने भाई की रक्षा कर कर्त्तव्य की पालना करो। यह सुन शक्तिसिंह की आंखें नम हो गईं। वह भी तुरन्त वहां से चल निकला। इस समय सत्रह तुरकों ने प्रताप का पीछा किया जिन्हें एक-एक कर प्रताप, शक्तिसिंह और चेतीबाई ने धूल चटा दी।

युद्ध की समाप्ति के बाद अकबर ने मानसिंह की पेशी की। पूछा- 'घोड़े की टांग कैसे टूटी? मारना तो योद्धा को चाहिये था।' इस पर मानसिंह ने जवाब दिया- 'घोड़े पर यदि वार नहीं करता तो वह सीधा गज पर उछलता इसलिए उसका पांव काटा गया। सवार मारने से पहले घोड़ा मारना जरूरी था।'

हल्दीघाटी का युद्ध प्रताप का प्रण-युद्ध था। अपने पिता उदयसिंह की पराजय के बारे में प्रताप ने सुन रखा था अत: भीतर से उन्हें मुगलों के प्रति जबर्दस्त डाह थी और इसका बदला लेना चाहते थे। फिर उन्हें यह भी ज्ञात था कि युद्ध में कंधा से कंधा भिड़ाकर साथ देनेवाले गढ़रक्षक गढ़ोलियों (गाड़ोलिया लुहार) ने प्रण कर रखा है कि जब तक चित्तौड़ विजय नहीं करेंगे, उधर पांव तक नहीं धरेंगे।

प्रताप ने इन गढ़ोलियों के स्वर में स्वर मिलाकर प्रतिज्ञा की- ''जब तक मुगल सेना पर विजय नहीं कर लूंगा तब तक अपने सिर से पगड़ी नहीं उतारूंगा। पांवों से जूतियां नहीं खोलूंगा और घोड़े से अलग नहीं रहूंगा।'' इस प्रतिज्ञा से सैनिकों में बड़ा जोश उमड़ा तब मीणों ने भी अपनी भुजाओं की ताकत दिखाते हुए पंचकेशी रखने और घर नहीं बांधने का प्रण लिया।

इस युद्ध में तीर तलवार तोप बंदूक तेग तुमर भाला कटार खांडा गोफण जमिया आदि से बड़ा कमाल दिखाया गया। चेटक देव घोड़ा था। प्रताप और चेटक दोनों का जन्म एक ही दिन हुआ। प्रसिद्धि है कि यह घोड़ा लोकदेवता देवनारायण ने दिया था। महाराणा सांगा देवनारायण के परम भक्त थे। चित्तौड़ में कुंभा महल के पास देवनारायण की जो मंदरी बनी हुई है वह सांगा की ही बनाई हुई है। सांगा अपने गले में देवनारायण का नावा अथवा फूल धारण किये रहते थे। पुरूषों में सभी जीव के थन होते हैं पर घोड़ा इसका अपवाद कहा गया है।

थन चेटक के नहीं थे तो प्रताप के भी नहीं थे इसीलिए चेटक और प्रताप दोनों अप्रतिम पौरूष के धनी थे। मेवाड़ में ऐसे कई स्थान जंगल गुफा एवं पहाड़ हैं जो प्रताप से सम्बन्धित बहुत सारी बातें तथा कथा किस्सों के गवाह हैं। उनका अध्ययन करने पर कई नये तथ्य हाथ लग सकते हैं।

सिसोदियों में बारह लिंग की पूजा का प्रचलन है। एक चौमुख लिंग राणा सांगा के पाटवी पुत्र तथा मीरांबाई के पति भोजराज ने मंगवाकर रख रखा था। इसकी स्थापना वे कहीं ऐसी जगह करवाना चाहते थे जहां तीर्थस्थल के रूप में लोगों का आना जाना हो सके परन्तु उनके जीतेजी यह कार्य नहीं हो सका। उनकी मृत्यु के बाद महाराणा प्रताप ने यह कार्य किया। उन्होंने कैलाशपुरी नामक गांव में इसकी स्थापना कराई जो वर्तमान में एकलिंगजी के मंदिर के नाम से जाना जाता है। प्रताप का बनवाया हुआ यह पहला मंदिर है। यह स्थान उदयपुर से सोलह किलोमीटर नाथद्वारा की ओर राष्ट्रीय राजमार्ग पर है।

इस चौमुखी लिंग की स्थापना के बाद **प्रताप ने एकलिंगनाथ को अपना राजपाट अर्पण कर उनकी दीवानी धारण कर ली। यह दीवानी पहले नहीं थी। शिव की पूजा तो थी। प्रताप को जब सब ओर से दुश्मनों ने घेर लिया तब सरदारों को एकत्र कर एकलिंगनाथ के श्रीचरणों में उन्होंने अपना राजपाट अर्पित कर दिया। कहा- ''राज म्हारा सूं न संभाल्यो जावे। लोग मार्‌या जावेगा। आप ही मालिक हो'' अर्थात् राज्य मेरे से नहीं संभाला जाता। लोग मारे जायेंगे। आप ही स्वामी हो।**

शिवलिंग की स्थापना प्रताप ने उदयपुर बसाने के बाद की। वे अपनी राजधानी ऐसी जगह स्थापित करना चाहते थे जो चारों ओर से सुरक्षित हो। पहले इस स्थान का नाम देवपुर दिया गया पर बाद में अपने पिता उदयसिंह के नाम पर उन्होंने इसका नाम उदयपुर किया। त्रिपोलिया के यहां की गहरी खाई को पाटकर उन्होंने महल बनवाये और चित्तौड़ के जीवों (आदमियों) को लाकर बसाया। महल के पिछवाड़े तालाब बंधवाया जिसका 'पीछोला' नाम दिया। बाद में राणा अमरसिंह ने कुछ और महल बनवाये। राजमहलों का खास विस्तार तो अंग्रेजों के समय हुआ।

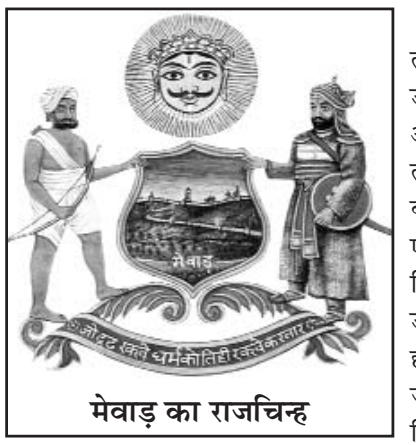

मेवाड़ का राजचिन्ह

सभी जानते हैं कि हल्दीघाटी के प्रसिद्ध रणक्षेत्र में जयपुर के राजा मानसिंह ने अकबर की ओर से मेवाड़ के महाराणा प्रताप से युद्ध किया था। इतिहासकारों ने मानसिंह का सही मूल्यांकन नहीं कर उसे नमकहराम और दगाबाज तक कहा। ये ही मानसिंह आगे जाकर मृत्यु के बाद लोकदेवता कल्लाजी के सेनापति हुए।

21 मई 1985 को जब मैं और कवयित्री डॉ. सुधा गुप्ता मीरां संबंधी शोध के सिलसिले में कल्लाजी के सेवक सरजुदासजी के सान्निध्य में गिरनार गये तब दत्तात्रेय के दर्शन कर लौटते हुए तपती दुपहरी में सरजुदासजी को मानसिंहजी के भाव पड़े और पहली बार उन्होंने सीढ़ियों पर ही हल्दीघाटी की रहस्य और रोमांच भरी वह दास्तान कह सुनाई जो अब तक सर्वथा अनजान रही। यह दास्तान इतिहास के कई अछूते पृष्ठ खोलती है साथ ही जनजीवन में फैली अनेक भ्रांत धारणाओं का शमन करती है।

मानसिंहजी ने कहा- इतिहास कहां लड़ाई में आकर लड़ता है। एक बहन के नाम को दबाने के लिए हमने क्या नहीं किया! अकबर के हर हुकम को बजाया।'' उसने कहा- ''इस राजपूत को भाला मारदे, हमने मार दिया। उस राजपूत को खड़ा चुनदे, हमने चुन दिया। हमने केवल एक ही बात का ध्यान रखा कि यदि राजपूत नारी बच गई तो कई राजपूत खड़े कर देंगी पर यदि सब मुगल हो गये तो सलीम ही सलीम पैदा हो जायेंगे।

इतिहास जो मुझे जानता है, अकबर के पीछे जानता है। उसे क्या मालूम कि कितनी रजपूतनियां मरदाना वेश धारण कर रणभूमि में काम आई। कोई नहीं जानता कि उन रणचंडियों ने कितने मुगलों का खात्मा किया। रजपूती भेष में जो भी वीरांगना सामने आती, हम हट जाते। उसके पड़दे की लाज से कोई मुगल यह नहीं जान पाया कि युद्ध में रणचंडी महिलाएं लड़ रही हैं। हमारे ही लोगों ने हमारे साथ कितना धोखा और षड़यंत्र किया, इसे कौन जानता है। हमने दिल्ली में गुपचुप बैठक बुलाई राजपूतों की, पर उस बैठक की सारी बात हमारे अपने ही लोगों ने जाकर अकबर को बता दी। इतिहास क्या जाने कि हमारे पीछे सौ गुप्तचर लगे रहते थे। एक बीरबल ही ऐसा था जिसने हमारी बहुत मदद की। वह बड़ा पंडित था। हमारे खिलाफ जो भी कुछ होता, वह हमें सचेत कर देता।

'हल्दीघाटी नाम हल्दी रंगी मिट्‌टी के कारण नहीं पड़ा। ऐसी मिट्‌टी वहां है भी कहां। लाल, पीली और काली तीन रंगों वाली मिट्‌टी है। फिर हल्दीघाटी नाम क्यों दिया गया। इसका एकमात्र कारण यह है कि यहां हल्दी चढ़ी कई नव विवाहिताएं पुरूष वेश में लड़ मरीं।'

'राणा प्रताप को तलवार के घाट उतारना कौनसी बड़ी बात थी। घोड़ों के हाड़ मजबूत होते हैं या सवार का दिल! जब हम घोड़ों को गाजर मूली की तरह काट सकते थे तो प्रताप को मारना क्या मुश्किल था। मगर जब-जब प्रताप पर हमने वार करना चाहा तब-तब उनकी धर्मपत्नी वीरांगना ने अपने हाथ के इशारे से हमें अपनी मांग के सिंदूर की रक्षा का संकेत दिया। इससे हम डांवाडोल होते रहे। हम जानते थे कि नारी के लिए सुहाग से बढ़कर कोई चीज नहीं होती। राजपूतनी वीरांगनाओं को हमने मां से कम नहीं समझा। इसीलिए राणा बचते चले गये। मुगलों में एक की भी ऐसी ताकत नहीं थी कि राणा के एक बाल तक को उखाड़ सके।'

'प्रताप का यह अंतिम युद्ध था जो 6 माह तक चला। एक दिन सूरज ढलने की तैयारी में था तब हमने राणा को युद्ध से चले जाने का इशारा किया। उस समय उनकी और हमारी आंखों में पानी था। इशारा पाते ही राणा वहां से हटे। इधर हमारा भाला पड़ा तो लोग समझे कि राणा मार दिये गये। जब वे खेमे में पहुंचे तब पता लगा कि राणा तो जिन्दा हैं।'

'हमने चेटक पर तलवार चलाई और उसका पांव काटा। अकबर दूर खड़ा यह तमाशा देख रहा था। वह बड़ा बुद्धिमान था। एक-एक तलवार कहां, किधर, कैसी चलती है, उसे सारा पता रहता था। हमसे भी सवाल हुआ तो जवाब में हमने यही कहा कि यदि घोड़े पर वार नहीं करते तो घोड़ा सीधा गज पर उछलता इसलिए उसका पांव काटा गया। सवार मारने से पहले घोड़ा मारना जरूरी था। नाले के उस पार जब चेटक कूद कर गिर पड़ा तो हमने शक्तिसिंह को कहा कि जाओ अपने भाई की रक्षा करो। बातें बड़ी गहरी हैं। वहां कौन इतिहास लिखता।'

'उदयपुर की मोतीमगरी पर राणा रहे। अकबर फकीर वेश में उनके दीदार करने आया। राणा को उनके लोगों ने कहा- यह कोई फकीर नहीं, अकबर है। इसका सर कलम कर दो मगर वाह रे राणा! उस राजपूत का कलेजा देखो। उसने कहा- अपने दर आया आदमी अतिथि होता है। राणा ने बच्चे के हाथ से उस फकीर को रोटी दिलाई। राजपूत कहते रहे- बिलाव की तरह चोरी छुपे आया और रोटी ले गया। तभी से उसे बिलाव कहा जाने लग गया। बिलाव का खिताब तो राजपूतों ने दिया अकबर को। इसे कौन जानता है। प्रताप ने अकबर को पहचान लिया था। यह पहचान उसकी आंख के नीचे मस्सा होने के कारण हुई। कई गुप्तचर भी होते थे जो एक दूसरे को भेद देते थे।'

'फतहसागर के किनारे ऊंची पहाड़ी पर बने महल में महाराणा प्रताप के प्रधानमंत्री भामाशाह ने सरदारों-उमरावों को आमंत्रित किया। भोज के दौरान असली मोती का एक-एक दोना परोसा। इससे यह भ्रम टूटा कि महाराणा का खजाना खाली नहीं हुआ है। कहते हैं मोती परोसने के कारण वह 'मोती महल' और उसका पूरा परिक्षेत्र 'मोती मगरी' के नाम से जाना गया।'

'मुगल आपसी रंजिश पैदा करने के लिए वीर राजपूत के साथ फरमान भेजते। हम भी आये थे खलीफा बनकर, रण का पैगाम लेकर। उदयपुर के पास पूर्व की ओर जो पठार है वहां जंगल में राणा को उनके भील-रक्षक के साथ संदेश कहलवाया तब राणा से हमारी मुलाकात हुई। हमने पहले तो उनकी सुनली। फिर जोश दिलाया कि लड़ाई तो हर हालत में करनी है। अकबर की सेना कोई गिन नहीं सकता था। एक-एक सेना नायक के साथ हजार के नीचे कोई सैनिक नहीं होते। यह सूबा कहलाता। ऐसे 122 सूबे और 3 हजार सेनापति थे। अकबर ने हल्दीघाटी के बाद कोई युद्ध नहीं किया।'

'चेटक और प्रताप का जन्म एक दिन हुआ। चेटक बड़ा रणनीतिबाज था। उसने कई लड़ाइयां लड़ीं। प्रताप को वह इतना प्रिय था कि उसकी मृत्यु के बाद प्रताप उसके गम में बीमार पड़ गये। उसका रंग काला व सफेद मिश्रित था। इसलिए उसे 'अबलक' कहते थे। दो रंगों वाले घोड़े आज भी अबलक कहलाते हैं। युद्ध में घोड़े से ही उसके मालिक की पहचान होती थी। यदि कोई योद्धा मर जाता तो उसका घोड़ा उसकी लोथ अथवा पाग लेकर उसके घर पहुंचता था। तब पगड़ी के साथ मृतक योद्धा की वीरांगना सती होती थी। ऐसी महिला 'पाग सती' कहलाती थी। घोड़ों पर या तो सईश बैठते या फिर रईश। सईश उगाड़ी पीठ पर बैठते जबकि रईश कांठी पर बैठा करते थे। चेटक देव घोड़ा था।'

चेटक अपने स्वामी की हर हरकत और गंध को पहचानता था। उसने अपने जीवनकाल में किसी अन्य को अपने पर सवारी नहीं करने दी। चेटक ने जिस नाले को पार किया वह अत्यन्त चौड़ा था। पार कर जहां वह खोड़ा (लंगड़ा) हुआ वहां एक इमली का पेड़ था। कालान्तर में वह स्थान खोड़ी इमली के नाम से जाना गया। चेटक की मृत्यु का सदमा प्रताप को इतना गहरा लगा कि उसका सिर अपनी गोद में लिये प्रताप भी अचेत हो गये। पास खड़ा शक्तिसिंह चेटक की मृत्यु पर प्रताप को इतना असहाय देख स्तब्ध रह गया और वह भी अपने आँसू नहीं रोक सका। ऐसे प्राणों से भी अधिक प्रिय चेटक की स्मृति को अक्षुण्ण रखने के लिए प्रताप ने वहीं सिद्धेश्वर मंदिर के पास छतरी बनवाई और महादेव शंकर के साथ-साथ उसकी पूजा के लिए श्रीधर व्यास को मुकर्रर किया।

इस संबंधी एक दन्ताल पत्र श्रीमाली जाति के व्यास गोत्रीय जमनालालजी से मुझे हल्दीघाटी स्थित चेटक की समाधि पर सुनने को मिला जो इस प्रकार था-

गाम बलीचे के निकट, चेटक ग्यो सुर धाम।
वही गाम वर विप्र को, पातल कीन प्रदान॥

जमनालालजी (85) ने बताया कि इसके लिए श्रीधर व्यास को पास का बलीचा गांव दान में दिया। वर्तमान में उनके पुत्र मोहनलाल श्रीमाली ने चेटक स्मारक के पास ही महाराणा प्रताप म्युजियम प्रारंभ किया जो प्रताप के जीवन को गौरवमय बनाये हुए है। मोहनजी के अनुसार श्रीधर नागदन्तजी के पुत्र थे। यह वंशावली इस प्रकार है- नागदन्त-श्रीधर-नीलकंठ-वसनो-वासुदेव-लहे आ-सवदास-हरिदास-बोटलो-केसवदास-नाथे-सवजी-मंशाराम-रदराम-सरजी-नंदलाल-मगनलाल(गोद आया)- जमनालाल- मोहनलाल-भूपेन्द्र कुमार।

प्रताप महाराणा उदयसिंह के लड़के थे। उनकी माता का नाम बेणीजी था जो चुहाण थी। अपने पिता के नाम पर उदयपुर की नींव प्रताप ने ही डाली। प्रताप के 11 पत्नियां थीं। इनमें से हल्दीघाटी युद्ध में चेतीबाई (चतरकुंवर) ने बड़ा जलवा दिखाया।

वह गोगुन्दा की चुहाण (चौहान) खानदान की थी। प्रताप का पुत्र अमरसिंह इसी चेतीबाई की कुक्षि से पैदा हुआ था। वह अंतिम समय तक महाराणा प्रताप के साथ रही। प्रताप की मृत्यु के 10 बरस बाद उसका निधन हुआ। चेतीबाई के साथ लगभग डेढ़ सौ और वीरांगनाएं थीं जिन्होंने बड़ी बहादुरी से हल्दीघाटी का युद्ध किया।

हकीम खां मूलत: मीणा था। वह बड़ा बहादुर योद्धा था। उसके पुरखों को मुगल बना दिया गया था। हल्दीघाटी युद्ध में प्रताप का पुत्र अमरसिंह नहीं लड़ा। शक्तिसिंह तो प्रताप की मृत्यु के बाद भरत की तरह राजगद्दी की सेवा कर राजकाज चलाने में सहायक रहा। अमरसिंह को राजगद्दी पर बिठाने के बाद ही उसका देहावसान हुआ।

इंटरनेट ने बदला पेपर इंडस्ट्री का बिजनेस मॉडल : सिंघानिया

- गोवा में दो दिवसीय ट्रेड पार्टनर्स कॉन्फ्रेंस -

उदयपुर। हम जिस वैश्विक वातावरण में रह रहे हैं वहां पर सबका हित एक-दूसरे से जुड़ा है। अमरीका और चीन के ट्रेड वार के बाद ग्लोबल ग्रोथ रेट में कमी आ रही है। इंटरनेट की दुनिया ने पेपर इंडस्ट्री का पूरा बिजनेस मॉडल ही बदल कर रख दिया है।

हर्षपति सिंघानिया

सभी सूचनाएं फिंगर टिप पर हैं। पूरा संसार आपके हाथों में समा गया है। कंपीटीशन बहुत बढ़ गया है। बीस साल में 52 प्रतिशत कंपनियां दौड़ से बाहर हो गईं। हमें डेटा को अपने हित में काम में लेते हुए सफलता के नए सोपान तय करने हैं।

ये विचार जेके पेपर लिमिटेड के वाइस चेयरमैन एवं मैनेजिंग डायरेक्टर हर्षपति सिंघानिया ने गोवा में आयोजित दो दिवसीय ट्रेड पार्टनर्स कॉन्फ्रेंस में व्यक्त किए। सिंघानिया ने कहा कि ग्लोबल ट्रेड वार के दौर में हमें यह देखना है कि हमारे लिए किस स्तर पर कितने नए अवसर पैदा हो रहे हैं व हमारे हितों पर क्या असर हो रहा है। हमें डेटा पावर का इस्तेमाल करते हुए ग्राहक संतुष्टि के साथ ही व्यवसाय में नए क्षेत्रों को एक्सप्लोर करना है।

उन्होंने कहा कि यह साइबर रोड सबके लिए है। हमें यहां पर प्रतिस्पर्धी होकर आगे बढ़ना होगा। हम लीडर्स हैं और हमें खुशी है कि वैश्विक मंदी के दौर में भी हम लगातार उसी गति से आगे बढ़ रहे हैं। उन्होंने प्रतिभागियों से कहा कि नए आइडियाज को जनरेट करें, शेयर करें ताकि पेपर इंडस्ट्री को नए मुकाम पर ले जाया जा सके। कनेक्ट, कोलॉबरेट, क्रिएट वेल्यू की त्रिवेणी को हमें मिलकर साकार करना होगा।

जे. के. पेपर के प्रेसिडेंट एवं डायरेक्टर ए. एस. मेहता ने कहा कि हम सबको समय के साथ बदलना है तो लगातार सीखते रहना पड़ेगा। जब सीखना बंद कर देंगे, उस दिन हम बदलाव की यात्रा और उसके बाद अपनी यात्रा को बंद कर देंगे। बिजनेस में जब अच्छा समय नहीं रहे, तब भी हमारा जज्बा बना रहना चाहिए। यही ताकत हमें खुद से मिलती रहनी चाहिए।

जो टफ लोग होते हैं वे उसमें भी बहुत अच्छा करते हैं। इस इंडस्ट्री में हम सबसे अलग हैं क्योंकि हममें से हर एक डिफरेंट हैं, बेहतर है। मेहता ने कहा कि कस्टमर, प्रोडक्ट, कॉस्ट, रिलेशन फ्रंट और सर्विस फ्रंट पर हमें बेहतर काम करना है। अब ग्राहकों का एक्सपेक्टेशन लेवल हाई हो गया है। हमारी कंपनी सबसे ज्यादा कस्टमर सेंट्रिक है व हमारे उनसे रिश्ते उत्तरोत्तर प्रगाढ़ हो रहे हैं। कहा भी जाता है कि जो कस्टमर से दूर होता जाएगा, वो दुनिया से दूर होता चला जाएगा। पर्यावरण संरक्षण के प्रति हमारी प्रतिबद्धता है कि हमारी फैक्ट्रियों की जितनी भी चिमनियां हैं वे सब ऑनलाइन सेंट्रल पॉल्यूशन बोर्ड से कनेक्टेड हैं।

ए. एस. मेहता

हमारी चिमनी पर सेंसर लगा है जिसमें से कैसे व कितना धुआं निकल रहा है उसकी मॉनिटरिंग दिल्ली में सरकारी तंत्र कर रहा है। हम आश्वस्त हैं क्योंकि हम सर्वश्रेष्ठ हैं।

स्वागत भाषण राजेश कपूर जीएम सेल्स कोर्डिनेशन ने दिया। सैकत बासु, सीजीएम सेल्स एवं संतोष वाकलू वीपी प्रोडक्ट डवलपमेंट ने प्रजेंटेशन के माध्यम से हर जोन की सफलता के आंकड़े बताए। सेल्स ट्रेनिंग, ग्राहकों की उम्मीदों आदि पर चर्चा की। चीफ सेल्स एंड मार्केटिंग पार्थ बिस्वास ने कहा कि व्यवसाय की चुनौतियों, भविष्य की संभावनाओं तथा जेके पेपर के विविध आयामों पर प्रजेंटेशन दिया। कॉन्फ्रेंस में 200 चैनल पार्टनर सहित 280 लोगों ने भाग लिया।

ट्रेड पार्टनर्स कॉन्फ्रेंस में उदयपुर से पार्श्वकल्ला पेपर्स की ओर से डॉ. तुक्तक भानावत भी उपस्थित थे।

- प्रस्तुति डॉ. तुक्तक भानावत

भारतीय राजनीति का बदलता व्याकरण

- डॉ. शूरवीरसिंह भाणावत -

हाल ही में संपन्न हुए लोकसभा चुनाव के क्रम में 23 मई 2019 को घोषित चुनाव परिणाम में नरेंद्र मोदी को प्रचंड बहुमत मिला और 'फिर एक बार मोदी सरकार' का नारा साकार हुआ। 70 वर्षों में यह तीसरी बार हुआ कि दो लगातार लोकसभा चुनाव में एक ही राजनीतिक पार्टी को पूर्ण बहुमत मिला। मोदी एवं अमित शाह की जोड़ी ने भारतीय राजनीति का व्याकरण ही बदल दिया।

मोदी इस देश के यथार्थ को समझने में सफल रहे। उन्हें देश की जनता की नब्ज भी पता है और कमजोरी भी। पिछले 5 वर्षों में विकास का मुद्दा गायब रहा। बेरोजगारी अपनी चरम सीमा पर पहुंच गई। विमुद्रीकरण से अर्थव्यवस्था चौपट हो गई। औद्योगिक उत्पादन में निरंतर गिरावट, ग्रोथ रेट में कमी तथा संवैधानिक संस्थाओं की निरंतर साख में कमी देखी गई बावजूद इसके मोदी को प्रचंड बहुमत मिला। मोदीजी को पता है कि देश की जनता महाराणा प्रताप के सिद्धांत पर चलने वाली है। भूखी रह जाएगी किंतु देश पर आंख उठाने वालों को माफ नहीं करेगी।

ऐसी स्थिति में पुलवामा घटना से सरकार की किरकिरी हो रही थी तब मोदी सरकार ने तुरंत बालाकोट सर्जिकल स्ट्राइक कर राष्ट्रवाद का नारा बुलंद कर दिया। इसमें बेरोजगार युवक सहित सभी राष्ट्रवाद की लहर में बह गए। मोदी जानते हैं कि यह देश छोटे-छोटे ग्रामों में बंटा है जहां शिक्षा का अभाव है किंतु राष्ट्रवाद की भावना कूट-कूट के भरी हुई है। वे यह संप्रेषित करने में कामयाब रहे कि भारतमाता को ऐसा कुशल नेता चाहिए जो सशक्त एवं परिवारवाद से अछूता हो तथा देश को आंतरिक एवं बाह्य सुरक्षा प्रदान कर सके। देश क्या चाहता है यह समझ उनमें है और उसको उन्होंने भुनाया भी।

मोदी अच्छी तरह जानते हैं कि यह देश युवाओं का देश है जिन्होंने न तो भारत का स्वतंत्रता आंदोलन देखा और न ही वे इतिहास की तरफ जाना चाहते हैं। उन्हें आदर्शवाद की बातें समझ में नहीं आती और उनकी अलग ही सोच विकसित हो रही है।

लोकसभा का यह चुनाव पूर्णरूपेण व्यक्ति केंद्रित था ना कि पार्टी केंद्रित। संगठन व्यक्तियों से परे चला गया। देश की जनता चमक-दमक आडंबर से जल्दी प्रभावित होती है और उसे सेलिब्रिटी की तरह मानने लगती है; मोदी ने इस तथ्य को भी भरपूर भुनाया और सफल हुए।

मोदी पिछले 5 वर्षों से लगातार अपनी ब्रांड इमेज बनाने में व्यस्त रहे। उन्होंने अपनी इमेज एक सेलिब्रिटी के रूप में विकसित की। विदेशी दौरे, विदेशी राष्ट्राध्यक्षों से गले मिलने का प्रयास, संसद की चौखट तथा संविधान को नमन, सभास्थलों पर आने से पहले और जाने के बाद मोदी-मोदी के नारे, सेलिब्रिटी की तरह सभास्थल में प्रवेश जैसी तकनीकों से वे अपनी ब्रांड इमेज बनाने में सफल हुए। मोदी ने भी वही किया जो पब्लिक चाहती है।

इस चुनाव में मोदी ने राष्ट्रवाद के नारे से वोट तो हासिल कर लिए किंतु वह भारत के लिए एक नई चुनौती पैदा करेगा। अब इस बात की भरपूर संभावना है कि उप राष्ट्रवाद की भावना प्रबल होगी। दक्षिण के राज्यों में इस चुनाव से उप राष्ट्रवाद की बात देखने को मिलती है। वहां मोदी सरकार का राष्ट्रवाद का नारा नहीं चला। केरल, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना और तमिलनाडु राज्यों में मोदी सरकार बेहतर प्रदर्शन नहीं कर सकी।

मोदी-शाह की सभी वर्ग के हिंदुओं के वोट पर ध्यान केंद्रित करने की रणनीति कारगर साबित हुई। उन्हें पता है भारत में 79.8 प्रतिशत हिंदू तथा 14.8 प्रतिशत मुस्लिम हैं। यदि मुस्लिम वोट नहीं भी मिले तो भी कामयाब होने की पूर्ण संभावना है। इसके लिए मोदी अपनी इमेज एक स्ट्रांग हिंदू नेता के रूप में स्थापित करने में भी सफल रहे।

इस बार के चुनाव में जो शाब्दिक गिरावट देखने को मिली वह अब तक के किसी भी चुनाव में नहीं मिली। सत्ता पक्ष विरोधी को सुनने की बजाय उसे कुचलने में विश्वास करता रहा।

जनता का अपार समर्थन मोदी को मिलने का एक कारण यह रहा कि मोदी किसी वंशवाद की उपज नहीं हैं। वे जनता को यह संप्रेषित करने में सफल रहे कि वे फकीर हैं। उनका कोई वंशवाद नहीं रहा जिसने राज किया और न उनके बाद ही ऐसा होगा। यह बात जनता के जहन में ऐसी उतरी कि देश के 25 मुख्य राजनीतिक घरानों का परिवारवाद ताश के पत्तों की तरह बिखर गया। इस दृष्टि से मोदी का सफल नैतृत्व एक नया राजनीतिक व्याकरण प्रस्तुत करता है।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।